संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
ऋषि प्रसाद
हिन्दी
मूल्य : रु. ६/-
१ सितम्बर २०११
वर्ष : २१ अंक : ३
(निरंतर अंक : २२५)
पूज्य बापूजी का
आत्मसाक्षात्कार दिवस :
२१ सितम्बर
पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू
आप महापुरुषों के स्नेह के, हृदय की
विशालता के संस्कारों को मत भूलो। ये
संस्कार घर-घर में, दिल-दिल में भगवत्प्रेम
की गंगा प्रकटाने का सामर्थ्य रखते हैं।

पूज्य बापूजी का आत्मसाक्षात्कार दिवस : २९ सितम्बर

जितना हो सके आप लोग मौन का सहारा लेना। बोलना पड़े तो बहुत धीरे बोलना और बार-बार अपने मन को समझाना, 'तेरा आसोज सुद दो दिवस (आत्मसाक्षात्कार-दिवस) कब होगा ? ऐसा क्षण कब आयेगा कि जिस क्षण तू परमात्मा में खो जायेगा ? ऐसी घड़ियाँ कब आयेंगी कि तू सर्वव्यापक, सच्चिदानंद परमात्मस्वरूप हो जायेगा ?
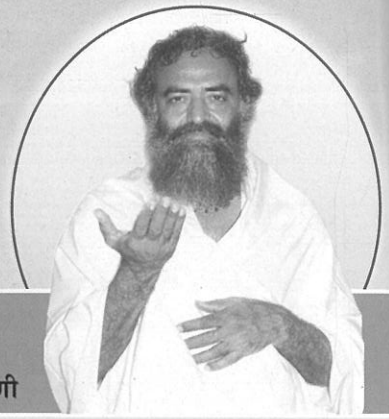
# तुम्हारा 'आसोज सुद दो दिवस' कब होगा ?

**- पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी**

ऐसी घड़ियाँ कब आयेंगी कि जब निःसंकल्प अवस्था को प्राप्त हो जायेंगे ? योगी योग करते हैं और धारणा रखते हैं दिव्य शरीर पाने की लेकिन वह दिव्य शरीर भी प्रकृति का होता है, अंत में नाश हो जाता है। मुझे न दिव्य शरीर पाना है, न दिव्य भोग भोगने हैं, न दिव्य लोकों में जाना है, न दिव्य देव-देह ही पाकर विलास करना है। मैं तो सत्-चित्-आनंदस्वरूप हूँ, मेरा मुझको नमस्कार है - ऐसा मुझे कब अनुभव होगा ? जो सबके भीतर है, सबके पास है, सबका आधार है, सबका प्यारा है, सबसे न्यारा है, ऐसे सच्चिदानंद परमात्मा में मेरा मन विश्रांत कब होगा ?'- ऐसा सोचते-सोचते मन को विश्रांति की तरफ ले जाना। ज्यों-ज्यों मन विश्रांति को उपलब्ध होगा त्यों-त्यों तुम्हारा तो बेड़ा पार हो ही जायेगा, तुम्हारा दर्शन करनेवाले का भी बेड़ा पार होने लगेगा।

आत्मसाक्षात्कार के समय जो होता है उसको वाणी में नहीं लाया जा सकता है। योग की पराकाष्ठा दिव्य देह पाना है, भक्ति की पराकाष्ठा भगवान के लोक में जाना है, धर्मानुष्ठान की पराकाष्ठा स्वर्ग-सुख भोगना है लेकिन तत्त्वज्ञान की पराकाष्ठा है अनंत-अनंत ब्रह्माण्डों में जो फैल रहा चैतन्य है, जिसमें कोटि-कोटि ब्रह्मा होकर लीन हो जाते हैं, जिसमें कोटि-कोटि इन्द्र राज्य करके भी नष्ट हो जाते हैं, जिसमें अरबों और खरबों राजा उत्पन्न होकर लीन हो जाते हैं, उस चैतन्यस्वरूप से अपने-आपका ऐक्य अनुभव करना। यह आत्मसाक्षात्कार की खबर है।

धर्म, भक्ति, योग व साक्षात्कार में क्या अंतर है यह समझना चाहिए। धर्म अधर्म से बचने के काम आता है। भक्ति भाव को शुद्ध करने के काम आती है। भोग हर्ष पैदा करने के काम आते हैं। योग हर्ष व शोक को दबाने के काम आता है, मन व इन्द्रियों को शुद्ध करने में काम आता है लेकिन आत्मसाक्षात्कार इन सबसे ऊँची चीज है। उसके इर्दगिर्द की बातें शास्त्रों में थोड़ी-बहुत आती हैं। धर्म से स्वर्गादि की उपलब्धि होती है, स्वर्ग में जाना पड़ता है। भक्ति से वैकुंठ में जाना पड़ता है सुख लेने के लिए। योग से दिव्य देह पाने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है किंतु साक्षात्कार सारे कर्तव्य छुड़ा देता है।

साक्षात्कार का अर्थ है कि जो सत्-चित्-आनंदस्वरूप परमात्मा है, उसमें मन का भलीभाँति तदाकार हो जाना। जैसे तरंग समुद्र से तदाकार हो जाती है, ऐसे ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मविद् हो जाता है। उसकी वाणी वेदवाणी हो जाती है। लौकिक भाषा हो या संस्कृत, भ्रम-भेद मिटाकर अभेद आत्मा में जगा देती है। साक्षात्कार कैसा होता है इसके बारे में कितना भी प्रयत्न किया जाय, उसका पूर्ण वर्णन नहीं हो सकता है। अन्य साधनाओं का फल लोक-लोकांतर में जाकर कुछ पाने का होता है लेकिन आत्मसाक्षात्कार के बाद कहीं जाकर कुछ पाना नहीं रहता। कुछ पाना भी नहीं रहता, कुछ खोना भी नहीं रहता। धर्मात्मा यदि अधर्म करेगा तो उसका पुण्य नष्ट हो जायेगा। योगी यदि दुराचार करेगा तो उसका योगबल नष्ट हो जायेगा। भक्त यदि भगवान की भक्ति छोड़ देगा तो अभक्त हो जायेगा। साक्षात्कार का मतलब एक बार साक्षात्कार हो जाय, फिर वह तीनों लोकों को मार डाले फिर भी उसको पाप नहीं लगता और तीनों

(शेष पृष्ठ १२ पर)

# ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका
हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगला भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २१ अंक : ०३
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २२५)
१ सितम्बर २०११ मूल्य : रु. ६-००
भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०६८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

### सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

#### भारत में

| अवधि | हिन्दी व अन्य भाषाएँ | अंग्रेजी भाषा |
|---|---|---|
| वार्षिक | रु. ६०/- | रु. ७०/- |
| द्विवार्षिक | रु. १००/- | रु. १३५/- |
| पंचवार्षिक | रु. २२५/- | रु. ३२५/- |
| आजीवन | रु. ५००/- | ---- |

#### विदेशों में (सभी भाषाएँ)

| अवधि | सार्क देश | अन्य देश |
|---|---|---|
| वार्षिक | रु. ३००/- | US $ 20 |
| द्विवार्षिक | रु. ६००/- | US $ 40 |
| पंचवार्षिक | रु. १५००/- | US $ 80 |
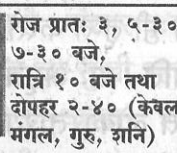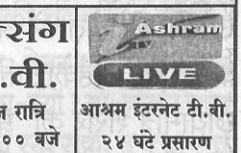
कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
: www.rishiprasad.org

## इस अंक में...



## विभिन्न टी.वी. चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे तथा दोपहर २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)

संस्कार
रोज दोपहर २-०० बजे

रोज सुबह ९-४० बजे

care WORLD
रोज सुबह ७-०० बजे

रोज रात्रि १०-०० बजे

आश्रम इंटरनेट टी.वी. २४ घंटे प्रसारण

**सजीव प्रसारण के समय नित्य के कार्यक्रम प्रसारित नहीं होते।**

✲ A2Z चैनल रिलायंस के 'बिग टी.वी.' (चैनल नं. ४२५) तथा 'डिश टी.वी.' (चैनल नं. ५७९) पर भी उपलब्ध है।
✲ care WORLD चैनल 'डिश टी.वी.' पर उपलब्ध है। चैनल नं. ७७०
✲ इंटरनेट पर www.ashram.org/live लिंक पर आश्रम इंटरनेट टी.वी. उपलब्ध है।

# अहंकार और प्रेम

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

जो जगत से सुखी होना चाहता है वह अकड़ने का मजा लेगा – 'मेरे पास इतनी गाड़ियाँ हैं, इतनी मोटरें हैं, इतना अधिकार है, और अधिकार हथियाऊँ...' यह रावण का रास्ता है और गुरु के प्रसाद से जो तृप्त हुए हैं, उनका रामजी का रास्ता है। सब कुछ देकर नंगे पैर जंगलों में घूमते हैं फिर भी रामजी संतुष्ट हैं, प्रसन्न हैं और रावण के पास सब कुछ है फिर भी असंतुष्ट है, अप्रसन्न है। अपनी पत्नी और लंका की सुंदरियाँ मिलने पर भी अहंकार चाहता है कि इतनी सुंदर सीता को लंका की शोभा बढ़ाने को ले आऊँ। अहंकार ले-ले के, बड़ा बनकर सुखी होना चाहता है और प्रेम दे-देकर अपने-आपमें पूर्णता का एहसास करता है।

अहंकार क्रोध में, लोभ में, विकारों में बरसकर, दूसरों को परिताप पहुँचाकर सुखी होना चाहता है लेकिन प्रेम अपनी मधुमय शीतलता से बरसते हुए दूसरों के दुःख, रोग, शोक हरकर उनकी शीतलता में अपनी शीतलता का एहसास करता है। अहंकार की छाया ऐसी है कि अहंकार छायामात्र शरीर को 'मैं' मानेगा और अपने आत्मा को 'मैं' रूप में न सुनेगा, न मानेगा, न जानेगा। जबकि प्रेम शरीर को क्षणभंगुर जानता है व मन परिवर्तनशील, तन परिवर्तनशील, चित्त परिवर्तनशील... उन सबका साक्षी जो है अपरिवर्तनशील, उस अपने आत्मदेव को 'मैं' मानता है, जानता है।

जो सबका साक्षी है, उसमें तृप्त होने का यत्न करता है तो जिज्ञासु है। तृप्त हो गया तो व्यासजी है, कृष्णजी है, रामजी है, नारायणस्वरूप है। अहंकार तोड़ता है और महापुरुष जोड़ते हैं। अहंकार अपनी छाया से हमें विक्षिप्त और वासनावान करता है लेकिन प्रेम अपनी प्रभा से हमें विकसित, संतुष्ट, तृप्त, दानी और निरभिमानी करता है। अहंकार संग्रह से संतुष्ट होता है और प्रेम बाँटकर तृप्त होता है।

अहंकार बाह्य शक्ति, सामग्री से बड़ा होना चाहता है और प्रेम परमात्म-प्रीति से पूरे बड़प्पन में अपने 'मैं' को मिलाने में राजी रहता है। तरंग कितनी भी बड़ी बने फिर भी सागर नहीं हो सकती है लेकिन छोटी-सी तरंग अपने को पानी माने तो सागर तो वह खुद ही है। ऐसे ही यह जीव शरीर को 'मैं' मानकर, कुछ पा के जो बड़ा बनता है, ये उसके बड़प्पन के ख्वाब रावण की दिशा के हैं। एम.बी.ए. पढ़े हुए बच्चों को सिखाया जाता है कि गंजे आदमी को कंघी बेचनी है और नंगे लोगों को कपड़े धोने का साबुन बेचना है। चाहे उनको काम आये या न आये, उनसे पैसे बनाओ। साधन इकट्ठे करो और सुखी रहो। जो भी ऐसा रास्ता लेते हैं, वे खुद परेशान रहते हैं और दूसरों का शोषण करते हैं लेकिन जो शबरी का, मीरा का, रैदासजी का, राजा जनक का रास्ता लेते हैं वे खुद भी तृप्त होते हैं, दूसरों को भी तृप्त करते हैं।

**स तृप्तो भवति। सः अमृतो भवति।**
**स तरति लोकांस्तारयति।**

अहंकार लेने के अवसर खोजता है और प्रेम देने के अवसर खोजता है। चाहे निगाहों से पोसे, वाणी से पोसे, हरड़ रसायन से पोसे, पंचगव्य से

पोसे अथवा हरि ॐ करके, प्रणाम करके पोसे, नम्रता के गुण देकर उनकी उन्नति करे... प्रेम अवसर खोजता रहता है कि मेरे सम्पर्क में आनेवाले पोषित हों और जो सम्पर्क में नहीं हों वे भी पोषितों से पोषित हों । मेरे शिष्य जायेंगे, भण्डारा करेंगे, सेवाएँ करेंगे । सरकार का एक करोड़ निकलता है तो लोगों तक कितने पहुँचते होंगे भगवान जाने... लेकिन हमारे यहाँ से एक करोड़ निकलता है तो लोगों तक तीन करोड़ होकर पहुँचता है। हमारे यहाँ से एक रुपया निकलता है तो शिष्यों द्वारा उसमें और सहयोग मिलता है। कोई सर्विस चार्ज नहीं, कोई हड़प चार्ज नहीं क्योंकि जो प्रेमी गुरु के प्यारे हैं, वे पहुँचाने में अपना भी सहयोग कर देते हैं। अहंकारी सबसे आगे और विशेष होने में मानता है और प्रेमी सबके पीछे रहकर, सेवा खोज के, मिटकर अमिट को पाने में सफल हो जाता है। राजा चतुरसिंह के उदयपुर राज्य में सत्संग होता था । वे संत-महात्मा के चरणों में जाते, पीछे बैठ जाते ।

**प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं ।**

अहंकार और प्रेम... एक म्यान में दो तलवारें नहीं रहतीं। अहंकार सब कुछ पा के, कुछ बनकर सुखी होने की भ्रांति में टकराते-टकराते हार जाता है, थक जाता है और प्रेम सब कुछ देते-देते अपने पूर्ण स्वभाव को जागृत कर लेता है ।

**ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष ।**
**मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ॥**

जो संसार में सुखी होना चाहता है, वह बड़े दुःख को बुलाता है। संसार दुःखालय है। संसार की सुविधा पाकर जो सुखी रहना चाहता है, वह किसी-न-किसीसे धोखा, शोषण और कई वस्तुओं की पराधीनता करेगा और जो संसार की सेवा खोजकर निर्वासनिक होता है, उसका प्रेम-स्वभाव स्वतः जागृत होता है । ❑

# हो-होकर क्या होगा !

चाहे गम के बादल घिर आयें ।
किस्मत में दुःख, दर्द हो आहें।
कंकड़, काँटों से भरी हो राहें ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !
चाहे टूट पड़ें सारी बाधाएँ ।
मौत भी सिर पर मँडराये ।
भयभीत करें उसकी निगाहें ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !
चाहे रुख बदले फिजा-ए-बहार ।
लड़ने को दुश्मन हो तैयार ।
जीत भी जाये, या हो हार ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !
चाहे निंदा-स्तुति हो तमाम ।
लोग करें कितना बदनाम ।
रखी हथेली पर हो जान ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !
चाहे काया, माया का हो मारा ।
सुख-वैभव, पद का हो विनाश ।
मिट जाये जीवन की आस ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !
चाहे बंधु-बांधव, न हो कोई सहारा ।
मनमीत सखा ना, कोई हमारा ।
वैरी हो जाये, संसार ये सारा ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !
चाहे साथी न हो कोई सम्बल ।
मुरझाया भी हो हृदयकमल ।
तब ये सोचो सब रहा बदल ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !
परब्रह्म तत्त्व है अजर-अमर ।
भय, शोक, वियोग से बेअसर ।
'साक्षी' चैतन्य है परमेश्वर ।
हो-होकर आखिर क्या होगा !

- जानकी चंदनानी (साक्षी)

**हे मनुष्य ! तू सत्स्वरूप, चेतनस्वरूप है । सब हो-होकर बदलता है, तू ज्यों-का-त्यों ! हो-होकर क्या होगा ! शरीर तो भगवान भी नहीं रख सके, तू क्या रख सकेगा ! डर मत, सिसक मत, अपनी बेवकूफी से जुड़ मत । अपनी महिमा में, अपने साक्षीस्वरूप में रहने से जो मंगल होगा, उसकी तुलना नहीं कर सकते ।** ❑

नोधः सुवृक्तिं प्र भरा मरुद्भ्यः । 'हे स्तुति करनेवाले मनुष्य ! तू विद्वान पुरुषों की स्तुति कर, महापुरुषों के गुण गा।' (ऋग्वेद : १.६४.१)

# तीन मुक्कों की सीख

पूज्य बापूजी के सद्गुरुदेव स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज बच्चों के चरित्र पर बहुत ध्यान देते थे तथा उन्हें प्यार भी करते थे। कहते थे कि 'बालक सुधरे तो मानो भारत सुधरा। बच्चे ही आगे चलकर देश का नाम रोशन करते हैं।'

कोई भी बच्चा उनका दर्शन करने जाता था तो उससे पूछते थे : ''कौन-सी कक्षा में पढ़ते हो ? स्वास्थ्य की व धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हो ?''

वे उन्हें पढ़ने के लिए अच्छी-अच्छी पुस्तकों के नाम बताते थे तथा उनके पास जो पुस्तकें होती थीं, उनमें से कुछ उन्हें अभ्यास करने के लिए देते थे। उन्हें यह समझाते थे कि 'सत्शास्त्रों के पढ़ने से, सत्संग करने से ही मन विकसित होता है। निर्मल बुद्धि ही विकास की ओर ले जाती है। जैसा-जैसा इन्सान होगा, उसके आसपास की दुनिया भी वैसी ही बनेगी। विचार को तुच्छ न समझें, विचार के आधार पर ही दुनिया चलती है। मन में पवित्र विचार होंगे तो कर्म भी वैसे ही होंगे। सदाचार के रास्ते पर चलने का सबसे अच्छा तरीका है मन को बुरी बातें सोचने से रोकना।'

आप बच्चों को हमेशा यही निर्देश देते थे कि 'सदाचारी बनो, मन के भीतर कभी भी अशुद्ध विचार आने नहीं दो। जबान को अपशब्द कहने से रोको। हाथ-पैरों को बुरे काम करने से रोको। यदि इन तीनों पर आपका नियंत्रण होगा तो बड़े होने पर अपना तथा बड़ों व देश का नाम रोशन करोगे। दूसरों की भलाई सोचने में अपनी भलाई समझो। विचारों को समझो सूक्ष्म वस्तु व वचनों को समझो स्थूल सूरत। विचारों को प्रकट करने का जबान के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। आपका वचन आपके विचारों का दर्पण है, उसमें आपके विचारों की तस्वीर है। मीठा बोलने से दूसरों का दिल जीत सकते हैं। मीठी व हमदर्दीभरी बातें सुनने से दुःखियों का दुःख दूर होता है। यदि कोई हमें गाली आदि देता है तो मन कितना उदास हो जाता है ! अतः भूलकर भी किसीको अपशब्द मत बोलो।'

एक बार की बात है। किसी विधवा माई ने अपने बच्चे के बारे में शिकायत की कि ''स्वामीजी ! यह बालक जो आप देख रहे हैं, १०वीं में पढ़ता है, मगर पढ़ने में बहुत कमजोर है। अभी अर्धवार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुआ है। इसे प्राचार्य ने सख्त हिदायत दी है कि यदि मेहनत नहीं करोगे तो तुम्हें बोर्ड की वार्षिक परीक्षा में बैठने नहीं दिया जायेगा। पढ़ाई में यह जितना कमजोर है, मारधाड़ में उतना ही तेज ! इसके पिता नहीं हैं। यह मेरा कहना नहीं मानता, मुझसे लड़ता रहता है। आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है, इसलिए यह ट्यूशन भी नहीं पढ़ सकता है। इस पर दयादृष्टि करें, जिससे इसका जीवन सँवर जाय।''

स्वामीजी ने बालक को बड़े प्रेम से अपने पास बिठाया। उसे अच्छी प्रकार से समझाकर गलतियों का एहसास करवाया तथा निर्देश दिये कि ''हररोज प्रातःकाल उठकर माता के चरणस्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेना। साथ ही माता को कहना कि वह तुम्हें रोज तीन मुक्के धीरे से लगाया करे। आओ, मैं तुम्हें लगाकर दिखाऊँ।''

स्वामीजी ने धीरे से एक मुक्का लगाकर

उससे कहा : ''जब तुम्हें पहला मुक्का लगे तो ऐसा समझना कि मुझे माता शारीरिक शक्ति प्रदान कर रही हैं तथा मेरा बल व बुद्धि बढ़ रहे हैं। दूसरा मुक्का लगने पर समझना कि मुझमें मानसिक शक्ति प्रवेश कर रही है तथा मेरा मन शुद्ध व बुद्धि निर्मल हो रही है। तीसरा मुक्का लगने पर समझना कि मुझमें आत्मिक शक्ति का प्रकाश हो रहा है तथा ज्ञान की धारा मुझमें आ रही है। तुम स्वयं को साक्षी, आत्मिक स्वरूप समझकर हमेशा खुश रहो तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा।''

वह बालक स्वामीजी की आज्ञानुसार प्रातःकाल अपनी माँ के चरणस्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेने लगा। माता उसे तीन मुक्के लगाती। जब परीक्षा का परिणाम आया तो सभी आश्चर्यचकित रह गये। हमेशा असफल रहनेवाला यह बालक संत की युक्ति और माँ के आशीर्वाद से इस बार अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो गया था। □

# व्रत, पर्व और त्यौहार

**२१ सितम्बर : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से सुबह ७-३१ तक)**

**२२ सितम्बर : गुरुपुष्यामृत योग (२२ सित. रात्रि २-४४ से २३ सित. सूर्योदय तक)**

**२७ सितम्बर : सर्वपित्री दर्श अमावस्या**

**२८ सितम्बर : शारदीय नवरात्र प्रारम्भ**

**२९ सितम्बर : पूज्य बापूजी का ४७वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस**

**२ अक्टूबर : महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री जयंती**

**६ अक्टूबर : विजयादशमी (वर्ष के सांढे तीन शुभ मुहूर्तों में से एक), दशहरा**

**११ अक्टूबर : शरद पूर्णिमा, वाल्मीकि जयंती**

**१२ अक्टूबर : कार्तिक पुण्यस्नान आरम्भ**

# नाहक की कमाई

पुराने समय की बात है। दिल्ली में एक बादशाह राज्य करता था। एक रात को वह वेश बदलकर घूमने निकला तो क्या देखा कि खजाने में रोशनी हो रही है। उसने मन में सोचा, 'इस समय आधी रात को खजाने में कौन है और क्या कर रहा है ?' जाकर देखा तो खजानची बैठकर हिसाब कर रहा था।

बादशाह ने कहा : ''अरे भाई ! इतनी रात तक क्यों जग रहे हो ?''

''महाराज ! हिसाब में कुछ गड़बड़ हुई है।''

''घाटा हुआ है कि मुनाफा हुआ है ?''

''महाराज ! घाटा हुआ होता तो उतनी चिंता की बात नहीं थी। घाटा नहीं फायदा हुआ है।

**कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोई।**
**आप ठगे सुख उपजे, और ठगे दुःख होई॥**

खजाने में हिसाब से जितना धन होना चाहिए, उससे ज्यादा जमा हुआ है।''

''अब सो जाओ, कल हिसाब कर लेना।''

''नहीं महाराज ! पता नहीं किस गरीब के पसीने की कमाई हमारे खजाने में आकर मिल गयी है। अब हमारे लिए यह नाहक की कमाई है। संतों के सत्संग में सुना है कि 'नाहक की कमाई आते समय तो दिखती है पर कुछ वर्षों के बाद मूलसहित चली जाती है। जाते समय दिखती भी नहीं है।' यह नाहक की सम्पदा रातभर भी क्यों रहे हमारे खजाने में ! क्या भरोसा कल सुबह तक मेरी मौत हो गयी तो ! मेरा तो कर्मबंधन बन जायेगा, जिसे चुकाने को फिर से जन्म लेकर उस गरीब के घर आना पड़ेगा। इसलिए अभी निकाल देता हूँ। कल उसको वापस कर दी जायेगी।''

''तुम्हारे जैसा सत्संगी खजानची जब तक मेरे राज्य में है, तब तक मेरे राज्य को कोई खतरा नहीं है।'' □

# अमूल्य औषधि

भगवन्नाम की महिमा का वर्णन करते हुए संत विनोबाजी भावे कहते हैं : ''मेरी तो यह धारणा है कि सभी रोगों और कष्टों की अचूक दवा ईश्वर में श्रद्धा रखकर भक्तिभाव से उपासना में तल्लीन रहना ही है । यदि आसपास भगवद्भक्ति का वातावरण रहे, भगवान के भक्तों द्वारा भजन होता रहे, तब तो कुछ पूछना ही नहीं है। इससे रोगी को परम शांति मिलेगी और उसके जीवन की बीमारी भी दूर हो जायेगी ।

दो दिन मुझे बुखार आया पर सुबह-शाम की प्रार्थना ज्यों-की-त्यों चलती रही । मेरी धारणा है कि बीमार मनुष्य के आसपास भगवान के भक्तों, संतों-महात्माओं के द्वारा लिखित भजनों का, भगवन्नाम का मधुर स्वर में गान करने से बेहतर न तो कोई दवा हो सकती है और न तो कोई सेवा। जो शांति और आराम नामस्मरण से प्राप्त होता है वह अन्यत्र दुर्लभ है । और जहाँ अनेक भक्त मिलकर सामूहिक प्रार्थना करते हों, भजन गाते हों, वहाँ का तो पूछना ही क्या है !

परंतु लोग श्रद्धारूपी अचूक दवा के रहते हुए भी नाना प्रकार की, नाना रूप की कृत्रिम दवाएँ लेते-देते हैं । सूर्य, पानी और आकाश आदि प्राकृतिक चीजों का उपयोग न करके महँगे और गलत इलाज करते हैं ।

एक ऋषि ने सोमदेव से औषधि के लिए पूछा तो सोमदेव ने ऋषि को उत्तर दिया कि 'पानी में सभी औषधियाँ निहित हैं । पानी का सेवन और परमेश्वर का स्मरण करो । सारे रोग दूर होंगे ।' ऐसा ऋग्वेद में लिखा है । पानी के साथ हवा और आकाश की मदद रोग से बचने के लिए लेनी चाहिए ।

भगवान यह नहीं देखते कि भक्त बैठकर भजन कर रहा है या सो करके, खाकर अथवा स्नान करके । वे तो सिर्फ हृदयपूर्वक की हुई भक्ति चाहते हैं । (बीमारी के कारण) दो दिनों तक मैं पड़ा-पड़ा प्रार्थना सुनता था पर तीसरे दिन बैठने की इच्छा हुई । भगवान बड़े दयालु हैं । वे इन सब बातों पर ध्यान नहीं देते । वे तो हृदय की भक्ति देखकर ही प्रसन्न होते हैं ।

भक्तों द्वारा जहाँ प्रेम से भजन गाये जाते हैं, वहाँ भगवान निश्चित रूप से रहते हैं और जहाँ सामूहिक भजन श्रद्धावान भक्तों द्वारा हो, वहाँ तो ईश्वर का रहना लाजिमी ही है ऐसा भगवान का कहना है ।

**नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वै ।**
**मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥**

'हे नारद ! मैं कभी वैकुण्ठ में भी नहीं रहता, योगियों के हृदय का भी उल्लंघन कर जाता हूँ परंतु जहाँ मेरे प्रेमी भक्त मेरे गुणों का गान करते हैं, वहाँ मैं अवश्य रहता हूँ ।' **(पद्म पुराण : ९४.२३)**

इसलिए सभी लोगों से मेरा नम्र निवेदन है कि आप लोग निरंतर भगवान के नाम के जप में, प्रार्थना में श्रद्धा के साथ अपने समय को लगाओ । कुछ दिनों के बाद अपने-आप ही भक्तिरस का अनुभव होने लगेगा और सभी प्रकार के रोगों से आप मुक्त हो जायेंगे, फिर रोग चाहे जैसे हों - शारीरिक अथवा मानसिक ।'' ❐

# बिना मुहूर्त के मुहूर्त !

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

**(विजयादशमी : ६ अक्टूबर २०११)**

विजयादशमी का दिन बहुत महत्त्व का है और इस दिन सूर्यास्त के पूर्व से लेकर तारे निकलने तक का समय अर्थात् संध्या का समय बहुत उपयोगी है। रघु राजा ने इसी समय कुबेर पर चढ़ाई करने का संकेत कर दिया था कि 'सोने की मुहरों की वृष्टि करो या तो फिर युद्ध करो ।' रामचन्द्रजी रावण के साथ युद्ध में इसी दिन विजयी हुए। ऐसे ही इस विजयादशमी के दिन अपने मन में जो रावण के विचार हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, चिंता - इन अंदर के शत्रुओं को जीतना है और रोग, अशांति जैसे बाहर के शत्रुओं पर भी विजय पानी है। दशहरा यह खबर देता है।

अपनी सीमा के पार जाकर औरंगजेब के दाँत खट्टे करने के लिए शिवाजी ने दशहरे का दिन चुना था - बिना मुहूर्त के मुहूर्त ! (विजयादशमी का पूरा दिन स्वयंसिद्ध मुहूर्त है अर्थात् इस दिन कोई भी शुभ कर्म करने के लिए पंचांग-शुद्धि या शुभ मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं रहती ।) इसलिए दशहरे के दिन कोई भी वीरतापूर्ण काम करनेवाला सफल होता है।

वरतंतु ऋषि का शिष्य कौत्स विद्याध्ययन समाप्त करके जब घर जाने लगा तो उसने अपने गुरुदेव से गुरुदक्षिणा के लिए निवेदन किया। तब गुरुदेव ने कहा : ''वत्स ! तुम्हारी सेवा ही मेरी गुरुदक्षिणा है। तुम्हारा कल्याण हो।''

परंतु कौत्स के बार-बार गुरुदक्षिणा के लिए आग्रह करते रहने पर ऋषि ने क्रुद्ध होकर कहा : ''तुम गुरुदक्षिणा देना ही चाहते हो तो चौदह करोड़ स्वर्णमुद्राएँ लाकर दो।''

अब गुरुजी ने आज्ञा की है। इतनी स्वर्णमुद्राएँ और तो कोई देगा नहीं, रघु राजा के पास गये। रघु राजा ने इसी दिन को चुना और कुबेर को कहा : ''या तो स्वर्णमुद्राओं की बरसात करो या तो युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।'' कुबेर ने शमी वृक्ष पर स्वर्णमुद्राओं की वृष्टि की। रघु राजा ने वह धन ऋषिकुमार को दिया लेकिन ऋषिकुमार ने अपने पास नहीं रखा, ऋषि को दिया।

विजयादशमी के दिन शमी वृक्ष का पूजन किया जाता है और उसके पत्ते देकर एक-दूसरे को यह याद दिलाना होता है कि सुख बाँटने की चीज है और दुःख पैरों तले कुचलने की चीज है। धन-सम्पदा अकेले भोगने के लिए नहीं है। **तेन त्यक्तेन भुंजीथा...** । जो अकेले भोग करता है, धन-सम्पदा उसको ले डूबती है।

भोगवादी दुनिया में विदेशी 'अपने लिए - अपने लिए...' करते हैं तो 'व्हील चेयर' पर और 'हार्ट अटैक' आदि कई बीमारियों से मरते हैं। अमेरिका में ५८ प्रतिशत को सप्ताह में कभी-कभी अनिद्रा सताती है और ३५ प्रतिशत को हर रोज अनिद्रा सताती है। भारत में अनिद्रा का प्रमाण १० प्रतिशत भी नहीं है क्योंकि यहाँ सत्संग है और त्याग, परोपकार से जीने की कला है। यह भारत की महान संस्कृति का फल हमें मिल रहा है।

तो दशहरे की संध्या को भगवान को प्रीतिपूर्वक भजे और प्रार्थना करे कि 'हे भगवान ! जो चीज सबसे श्रेष्ठ है उसीमें हमारी रुचि करना।' संकल्प करना कि 'आज प्रतिज्ञा करते हैं कि हम ॐकार का जप करेंगे।'

'ॐ' का जप करने से देवदर्शन, लौकिक कामनाओं की पूर्ति, आध्यात्मिक चेतना में वृद्धि, साधक की ऊर्जा एवं क्षमता में वृद्धि और जीवन में दिव्यता तथा परमात्मा की प्राप्ति होती है। ❑

## साक्षात्कार करना तो है लेकिन...

श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी कहते हैं :

**दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रहहेतुकम् ।**
**मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः ॥**

'भगवत्कृपा ही जिनकी प्राप्ति का कारण है वे मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व (मुक्त होने की इच्छा) और महान पुरुषों का संश्रय (सान्निध्य) - ये तीनों दुर्लभ हैं ।' **(विवेक चूड़ामणि : ३)**

एक व्यक्ति ने किसी आध्यात्मिक ग्रंथ में पढ़ा कि मनुष्य-जीवन ईश्वर-साक्षात्कार करने के लिए ही होता है । अगर वह नहीं किया तो जीवन निष्फल हो जाता है । उसने अपनी तरफ से बहुत प्रयास किया, तरह-तरह की साधनाएँ कीं, तीर्थों में भटका परंतु कुछ रास्ता न मिला । भगवान के लिए कोई सच्चाई से चलता है तो वे उसे अपने प्यारे संतों की संगति देते हैं । एक बार मार्ग में उसने देखा कि किन्हीं महात्मा का सत्संग हो रहा है । उसने सोचा, 'हो सकता है यहाँ कोई उपाय मिल जाय ।'

**जब द्रवै दीनदयालु राघव, साधु संगति पाइये।**
**(विनयपत्रिका : १३६.१०)**

महात्मा का सत्संग सुनने के बाद तो उसके हृदय में ईश्वर का साक्षात्कार करने की धुन सवार हो गयी । उसने सोचा, 'अब तो मुझे इन्हींकी शरण में रहना है ।' सत्संग पूरा होने के बाद सब चले गये पर वह देर रात तक वहीं बैठा रहा । महात्माजी ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा : ''बेटा ! क्या चाहते हो ?''

''स्वामीजी ! मैं ईश्वर का साक्षात्कार करना चाहता हूँ । क्या मुझे वह हो सकता है ?''

''क्यों नहीं, कल सुबह आना । हम लोग सामने के पहाड़ की चोटी पर चलेंगे । वहाँ मैं तुम्हें उसके रहस्य की प्रत्यक्ष अनुभूति कराऊँगा ।''

अगले दिन वह एकदम सुबह-सुबह महात्मा के पास पहुँचा । संत बोले : ''तुम इस गठरी को सिर पर रख लो और मेरे साथ चलो ।''

वह बड़ी उमंग से चल पड़ा । पहाड़ की चोटी काफी ऊँची थी । थोड़ी देर बाद वह बोला : ''स्वामीजी ! मैं थक गया हूँ, चला नहीं जाता ।''

स्वामीजी ने सहज भाव से कहा : ''कोई बात नहीं, गठरी में पाँच पत्थर हैं । एक निकालकर फेंक दो । इससे गठरी कुछ हलकी हो जायेगी ।''

उसने एक पत्थर फेंक दिया । कुछ ऊपर चढ़ने पर फिर उसे थकान होने लगी । महात्मा ने कहा : ''एक पत्थर और कम कर दो ।''

इस प्रकार वह ज्यों-ज्यों ऊपर की ओर बढ़ता जाता, त्यों-त्यों कम वजन भी भारी लगने लगता । महात्माजी ने एक-एक करके सभी पत्थर फिंकवा दिये । फिर तो केवल कपड़ा बचा । उसे कंधे पर डालकर वह बड़ी सरलता से चोटी पर पहुँच गया । उसने महात्माजी से कहा : ''स्वामीजी ! हम चोटी पर तो आ गये, अब ईश्वर-साक्षात्कार कराइये ।''

स्वामीजी मुस्कराते हुए बोले : ''बेटे ! जब पाँच पत्थर की गठरी उठाकर तू पहाड़ पर नहीं चढ़ सका तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद की चट्टानें सिर पर रखकर ईश्वर का साक्षात्कार कैसे कर सकता है !''

उसको अपनी भूल का एहसास हुआ । उसने विनम्रता से प्रार्थना करते हुए कहा : ''स्वामीजी ! अब आप ही मेरा मार्गदर्शन करने की कृपा करें ।''

महात्मा ने उसे दीक्षा दी, साधना की पद्धति बतायी और निःस्वार्थ भाव से सेवा करने को कहा । फिर तो वह उन महात्मा की शरण में रहकर उनके बताये अनुसार साधना करके अपने महान उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो गया । □

## उपासना के नौ दिन

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

**(शारदीय नवरात्रि : २८ सितम्बर से ५ अक्टूबर)**

नवरात्रि में शुभ संकल्पों को पोषित करने, रक्षित करने और शत्रुओं को मित्र बनानेवाले मंत्र की सिद्धि का योग होता है । वर्ष में दो नवरात्रियाँ आती हैं । शारदीय नवरात्रि और चैत्री नवरात्रि । चैत्री नवरात्रि के अंत में रामनवमी आती है और दशहरे को पूरी होनेवाली नवरात्रि के अंत में रामजी का विजय-दिवस विजयादशमी आता है । एक नवरात्रि के आखिरी दिन रामजी का प्रागट्य होता है और दूसरी नवरात्रि आती है तब रामजी की विजय होती है, विजयादशमी मनायी जाती है । इसी दिन समाज को शोषित करनेवाले, विषय-विकार को सत्य मानकर रमण करनेवाले रावण का श्रीरामजी ने वध किया था ।

नवरात्रि को तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है । इसमें पहले तीन दिन तमस् को जीतने की आराधना के हैं । दूसरे तीन दिन रजस् को और तीसरे तीन दिन सत्त्व को जीतने की आराधना के हैं । आखिरी दिन दशहरा है । वह सत्त्व-रज-तम तीनों गुणों को जीत के जीव को माया के जाल से छुड़ाकर शिव से मिलाने का दिन है । शारदीय नवरात्रि विषय-विकारों में उलझे हुए मन पर विजय पाने के लिए और चैत्री नवरात्रि रचनात्मक संकल्प, रचनात्मक कार्य, रचनात्मक जीवन के लिए, राम-प्रागट्य के लिए है ।

नवरात्रि के प्रथम तीन दिन होते हैं माँ काली की आराधना करने के लिए, काले (तामसी) कर्मों की आदत से ऊपर उठने के लिए । पिक्चर देखना, पानमसाला खाना, बीड़ी-सिगरेट पीना, काम-विकार में फिसलना - इन सब पाशविक वृत्तियों पर विजय पाने के लिए नवरात्रि के प्रथम तीन दिन माँ काली की उपासना की जाती है ।

दूसरे तीन दिन सुख-सम्पदा के अधिकारी बनने के लिए हैं । इसमें लक्ष्मीजी की उपासना होती है । नवरात्रि के तीसरे तीन दिन सरस्वती की आराधना-उपासना के हैं । प्रज्ञा तथा ज्ञान का अर्जन करने के लिए हैं । हमारे जीवन में सत्-स्वभाव, ज्ञान-स्वभाव और आनंद-स्वभाव का प्रागट्य हो । बुद्धि व ज्ञान का विकास करना हो तो सूर्यदेवता का भ्रूमध्य में ध्यान करें । विद्यार्थी सारस्वत्य मंत्र का जप करें । जिनको गुरुमंत्र मिला है वे गुरुमंत्र का, गुरुदेव का, सूर्यनारायण का ध्यान करें ।

आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक का पर्व शारदीय नवरात्रि के रूप में जाना जाता है । यह व्रत-उपवास, आद्यशक्ति माँ जगदम्बा के पूजन-अर्चन व जंप-ध्यान का पर्व है । यदि कोई पूरे नवरात्रि के उपवास-व्रत न कर सकता हो तो सप्तमी, अष्टमी और नवमी तीन दिन उपवास करके देवी की पूजा करने से वह सम्पूर्ण नवरात्रि के उपवास के फल को प्राप्त करता है । **देवी की उपासना के लिए तो नौ दिन हैं लेकिन जिन्हें ईश्वरप्राप्ति करनी है उनके लिए तो सभी दिन हैं ।** □

(आवरण पृष्ठ २ से 'तुम्हारा आसोज सुद...' का शेष)

लोकों को भंडारा करके भोजन कराये तो भी उसको पुण्य नहीं होता । क्योंकि वह एक ऐसी जगह, ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा है कि वहाँ पुण्य नहीं पहुँचता, पाप भी नहीं पहुँचता । वह ऐसी ऊँचाई पर खड़ा है कि वहाँ धर्म भी नहीं पहुँचता और अधर्म भी नहीं पहुँचता है । वह आत्मवेत्ता एक ऐसी जगह पर खड़ा है । अखा भगत कहते हैं :

**राज्य करे रमणी रमे, के ओढ़े मृगछाल ।**
**जो करे सब सहज में, सो साहेब का लाल ॥**

यह आत्मज्ञान भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को सुनाते हैं : **त्रैगुण्यविषया वेदा...** 'वेदों का ज्ञान, वेदों की उपलब्धियाँ भी तीन गुणों के अंतर्गत हैं ।' **निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।** 'अर्जुन ! तू तीनों गुणों से पार चला जा ।'

ज्ञानी क्या होता है ? वह सत्त्वगुण भी नहीं चाहता । भक्त सत्त्वगुण चाहता है, भोगी रजोगुण चाहता है, आलसी तमोगुण चाहता है । आलसी तमोगुण में सुख ढूँढ़ता है, भोगी रजोगुण में सुख ढूँढ़ता है और भक्त सत्त्वगुण में - **ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था...** वह सात्त्विक लोकों में जाता है । ज्ञानी आत्मा को जानने से तीनों गुणों और तीनों लोकों को काकविष्ठा जैसा जान लेता है ।

**कबीरा मन निर्मल भयो, जैसे गंगा नीर ।**
**पीछे पीछे हरि फिरै, कहत कबीर कबीर ॥**

ज्ञानी का अर्थ है कि जिसके पीछे-पीछे ईश्वर भी घूम ले । भक्त का अर्थ है कि जो भगवान के पीछे घूमे । भोगी का अर्थ है कि जो भोग के पीछे घूमे । योगी का अर्थ है कि जो दिव्य देह पाने के पीछे घूमे । अभी घूमना बाकी है । साक्षात्कार का अर्थ है कि बस...

**जानना था वो ही जाना, काम क्या बाकी रहा ?**
**लग गया पूरा निशाना, काम क्या बाकी रहा ?**
**देह के प्रारब्ध से मिलता है सबको सब कुछ।**
**नाहक जग को रिझाना, काम क्या बाकी रहा ?**
**लाख चौरासी के चक्कर से थका, खोली कमर ।**
**अब रहा आराम पाना, काम क्या बाकी रहा ?**

साक्षात्कार का मतलब है पूर्ण विश्रांति, पूर्ण ज्ञान, पूर्ण शांति, पूर्ण उपलब्धि ! पूर्ण तो एक परमात्मा है । गुरुकृपा से परमात्मा के सत्यत्व को, परमात्मा के चेतनत्व को, परमात्मा के आनंदत्व को, परमात्मा के अमिट तत्त्व को जानकर अपनी देह के गर्व, अभिमान और अपनी देह की कृति तुच्छ मान के उसमें कर्तृत्वभाव को अलविदा कर देना, इसका नाम है 'साक्षात्कार' । भोग में है तो भोगी भोग से मिलता है । त्याग में है तो त्यागी त्याग करता है । तपस्वी भी लोकांतर में सुख से मिलता है लेकिन साक्षात्कार का अर्थ है कि ईश्वर ईश्वर से मिले । **देवो भूत्वा यजेद् देवम् ।**

निर्वासनिक हो तो तुम ईश्वर हो । निश्चिंत हो तो तुम ईश्वर हो । यदि देह की मैल तुम्हारे में नहीं है और तुम अपने को आत्मभाव से प्रकट कर सको तो तुममें और ईश्वर में फर्क नहीं है । यदि देह के साथ जुड़ गये तो तुम्हारे और ईश्वर में बड़ा फासला है । भोग के साथ जुड़ गये, स्वर्ग के साथ जुड़ गये, धन के साथ जुड़ गये, कुछ पाने के साथ जुड़ गये तो भिखारी हो और कुछ पाने की इच्छा नहीं है, अपने-आपको तुमने खो दिया तो समझो साक्षात्कार ! साक्षात्कार का अर्थ है कि कहीं भी मस्त न होना -

**देखा अपने आपको मेरा दिल दीवाना हो गया ।**
**न छेड़ो मुझे यारों मैं खुद पे मस्ताना हो गया ॥**

खुद पर, अपने आत्मा पर जब चित्त मस्त हो जाय, अपने-आपमें जब आप विश्रांति पाने लगो, आपके आगे स्वर्ग फीका हो जाय, आपके आगे वैकुंठ फीका हो जाय, आपके आगे प्रधानमंत्री का पद तो क्या होता है, इन्द्र-पद, ब्रह्माजी का पद भी फीका हो जाय तो समझो कि साक्षात्कार हो गया ।

भक्त लोग ब्रह्मा, विष्णु, महेश के लोक में जाते हैं । तपस्वी तप करके स्वर्ग में जाते हैं । साक्षात्कार का अर्थ है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश का जो पद है, वह भी तुच्छ भासने लग जाय । इससे बढ़कर साधना की पराकाष्ठा नहीं हो सकती, इससे बढ़कर कोई उपलब्धि नहीं हो सकती । आत्मसाक्षात्कार आखिरी उपलब्धि है । ❑

# तुम लगे रहो...

– पूज्य बापूजी

समत्व योग बड़ा महत्त्वपूर्ण योग है। इस योग को समझने के लिए, इसमें प्रवेश करने के लिए धारणा, ध्यान, समाधि करो। समाधि करना अच्छा है, ध्यान करना अच्छा है, जप करना अच्छा है, सेवा करना अच्छा है लेकिन इन सबका फल यह है कि तुम विदेही की नाईं शोभा पा लो।

एक महात्मा बड़े सूक्ष्म विषय पर प्रवचन करते थे। वेदांत की गूढ़ बातें साधकों को समझाते थे। एक भक्त खोमचा लेकर साधकों की ग्राहकी भी कर लेता था और महात्मा का प्रवचन भी सुन लेता था। भक्त और साधक जब सत्संग सुनते थे तो वह भी सत्संग में एकतान हो जाता। कई महीने सत्संग सुनने के बाद एक बार वह बाबाजी के चरणों में दंडवत् प्रणाम करके कहता है : ''गुरु महाराज ! मैंने वेदांत को सुन लिया, समझ लिया कि यह (संसार) सरकनेवाली चीज है। अन्वय (संबंध) और व्यतिरेक (असमानता) का सिद्धांत मैंने जान लिया। जाग्रत का व्यतिरेक स्वप्न में हो जाता है, स्वप्न का व्यतिरेक सुषुप्ति में हो जाता है लेकिन आत्मा का तीनों अवस्थाओं में अन्वय है। दुःख है, दुःख आया तो सुख गायब हो गया। सुख आया तो दुःख गायब हो गया। चिंता आयी तो आनंद गायब हो गया, हर्ष गायब हो गया और हर्ष आया तो चिंता गायब हो गयी किंतु इनमें आत्मा ज्यों-का-त्यों है। यह मैं जान तो गया। बचपन आया, चला गया लेकिन बचपन का द्रष्टा रहा। जवानी आयी, चली गयी लेकिन उसको देखनेवाला रहा। बुढ़ापा आया, मौत आयी परंतु मौत के बाद भी मैं रहता हूँ। मर जाने के बाद भी सुखी रहूँ – ऐसा भाव हम लोगों का होता है। यह बात आपकी मैंने गुरु महाराज ! अच्छी तरह से समझ ली, लेकिन आत्मा की मुक्तता का अनुभव मुझे नहीं हो रहा है। आत्मा मुक्त है, शरीर संसारी है। शरीर की संसार के साथ और आत्मा की परमात्मा के साथ एकता अनुभव करने की आपश्री की तरफ से जो वाणी थी, वह वाणी मैं समझ तो गया किंतु गुरु महाराज ! हे कृपानाथ ! हे प्राणिमात्र के परम मित्र, परम हितैषी गुरुवर ! मैं तो एक छोटा-सा धंधेवाला दिख रहा हूँ, खोमचेवाला, चना बेचनेवाला। आपके वचन समझ तो गया हूँ लेकिन आत्मा का आनंद प्रकट नहीं हुआ।''

बाबाजी ने कहा : ''कोई प्रतिबंधक प्रारब्ध, रुकावट का कोई प्रारब्ध होगा इसीलिए तुम समझ गये फिर भी आनंद प्रकट नहीं होता है। तुम लगे रहना।''

गर्मियों के दिन थे, धूप तड़ाके की थी, लू चल रही थी। एक मोची उस गर्मी में, लू में नंगे पैर, नंगे सिर कष्ट का शिकार होता हुआ लथड़ता-लथड़ता आकर एक पेड़ के करीब बेहोश होकर गिरा। खोमचेवाले ने देखा कि गर्मी के मारे इसके प्राण सूख रहे हैं, कंठ सूख गया है। उसने उसके सिर पर हलकी-सी तेल की मालिश की। शर्बत बनाकर उसके मुँह में थोड़ा-थोड़ा डाला। फिर चने-वने खिलाकर उसको जरा तसल्ली दी। वह आदमी उठ खड़ा हुआ। जब वह जाने लगा तो धन्यवाद से, कृतज्ञता से उसकी आँखें भर गयीं। बार-बार उसकी आँखों से कुछ टपक रहा है। कुछ आशीर्वाद का भाव टपक रहा है। वह मोची तो चला गया लेकिन मोची के द्वारा वह अंतर्यामी परमात्मा इस पर बरस पड़ा। इसके हृदय में वह आनंद छलकने लगा। 'मोची के वेश में, खोमचेवाले के वेश में, श्रोताओं के वेश में, धनवान के वेश में और निर्धन के वेश में यह जो दिख रहा है, वह उसकी माया है लेकिन इसको जो चला रहा है वह

महेश्वर है । वह सच्चिदानंद सोऽहम् है । वही मैं हूँ ।' - ऐसा बोध प्रकट होने लगा । चित्त में बड़ी शांति, बड़ी निर्मलता, बड़ी आध्यात्मिक पूँजी प्रकट होने लगी । गुरुजी के पास गया । प्रणाम करके अपनी स्थिति का वर्णन करने लगा कि थोड़ी-सी सेवा करने से यह आत्मानंद प्रकट हुआ है ।

बाबा ने कहा कि ''निष्काम भाव से किये हुए कर्म अंतःकरण को शुद्ध करते हैं और शुद्ध हृदय में अपना मुख दिखता है। जैसे साफ आईने में अपना चेहरा दिखता है, ऐसे ही शुद्ध हृदय में अपने स्वरूप का बोध होता है। तेरा प्रतिबंधक प्रारब्ध हट गया ।''

घटना घट जाय तो घड़ीभर में काम हो जाता है। लगे रहें, कोई-न-कोई ऐसी घड़ी आती है जब सुने हुए उस तत्त्वज्ञान का, उसकी गरिमा का हम प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं । ॐ... ॐ... ॐ... □

## कुछ उपयोगी मुद्राएँ

प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो के आसन बिछाकर पद्मासन अथवा सुखासन में बैठो । पाँच-दस गहरे साँस लो और धीरे-धीरे छोड़ो । उसके बाद शांतचित्त होकर निम्न मुद्राओं को दोनों हाथों से करो । विशेष आवश्यक परिस्थिति में इन्हें कभी भी कर सकते हो ।

### ज्ञान मुद्रा

**लाभ :** मानसिक रोग जैसे कि अनिद्रा अथवा अतिनिद्रा, कमजोर यादशक्ति, क्रोधी स्वभाव आदि हो तो यह मुद्रा अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगी ।

यह मुद्रा करने से पूजा-पाठ, ध्यान-भजन में मन लगता है। इस मुद्रा का अभ्यास प्रतिदिन ३० मिनट करना चाहिए ।

**विधि :** तर्जनी अर्थात् प्रथम उँगली को अँगूठे के नुकीले भाग पर स्पर्श कराओ। शेष तीनों उँगलियाँ सीधी रहें।

**(आश्रम से प्रकाशित 'जीवन विकास' पुस्तक से क्रमशः)**

## कर्म का फल हाथों-हाथ

पुराने पंजाब के मुजफ्फरगढ़ जिले के छोटे-से गाँव की यह सत्य घटना है । वहाँ रामदास नाम के एक भगवद्भक्त दर्जी रहते थे, जो आसपास के जमींदार परिवारों के कपड़े सिलकर अपनी आजीविका चलाते थे। वे हमेशा भगवन्नाम-स्मरण और भगवान की लीलाओं के गान में ही तल्लीन रहते थे । कपड़े सिलते समय भी उनका सुमिरन सतत चलता रहता । कभी कपड़ा सिलने की मशीन की टिक-टिक के साथ नामोच्चारण का तार बँध जाता तो कभी हाथ की सिलाई के साथ लीला-पदों का गान होता रहता ।

कलियुग में अनेकों दोष हैं किंतु इसमें एक बहुत बड़ा गुण भी है कि केवल भगवन्नाम का कीर्तन, जप, स्मरण आदि लोगों के पाप, ताप, अशांति व दुःखों को दूर कर ब्रह्म-परमात्मा का रस जगा देता है । संत तुलसीदासजी ने कहा है :

**कलिजुग केवल हरि गुन गाहा ।**
**गावत नर पावहिं भव थाहा ॥**

**(श्री रामचरित. उ.कां. : १०२.२)**

भगवन्नाम-कीर्तन से भक्त रामदास का हृदय निर्मल हो गया था । अब वे शांतिमय तथा संतोषपरायण जीवन व्यतीत करते थे। उन्हें दुःखद घटनाएँ भी दुःखी नहीं कर पाती थीं। सब घटनाओं में वे परमात्म-कृपा का अनुभव करते थे । उनसे सभी लोग बड़े प्रसन्न थे और उन्हें भगतजी कह के पुकारते ।

रामदासजी का एक मुसलमान पड़ोसी था, जो उनसे द्वेष करता था । इनका शांति और आनंद से रहना उससे सहन नहीं होता था । वह हमेशा इनको परेशान व दुःखी करने के लिए कुछ-न-कुछ करता रहता पर सफल नहीं हो पाता । वह हमेशा सोचता रहता कि 'यदि इस काफिर की मशीन न रहे तो यह अपनी आजीविका का अर्जन न कर सकेगा और दूसरी जगह चला जायेगा ।' एक दिन अवसर पाकर उसने भगतजी की मशीन चुरा ली ।

रामदासजी ने सोचा कि 'मेरे प्रभु को मशीन की टिक-टिक अच्छी नहीं लगती होगी इसलिए उन्होंने उसे उठवा दिया ।' वे प्रसन्न चित्त से हाथ से ही कपड़े सीने लगे । उन्होंने मशीन की चोरी होने की सूचना भी पुलिस में नहीं दी ।

भगवान और संत अपने ऊपर आये हुए कष्ट और दुःख तो सहन कर लेते हैं पर अपने भक्तों के ऊपर आयी हुई मुसीबतों को वे नहीं सहन कर पाते । अतः भक्तवत्सल भगवान से यह सहन नहीं हुआ और चोर के दायें हाथ की हथेली में एक भयंकर फोड़ा हो गया । इतनी भयंकर पीड़ा होने लगी कि दिन का चैन व रात की नींद हराम हो गयी । अगले ही दिन डॉक्टर के पास जाकर उसे चीरा लगवाना पड़ा पर कोई आराम नहीं हुआ बल्कि समस्या और बढ़ गयी । औषधि-प्रयोग से एक फोड़ा कुछ ठीक होता तो दूसरा निकल आता । बहुत जगह इलाज कराया । झाड़-फूँक, टोना-टोटका... जिसने जो कहा, सब किया पर कुछ फायदा नहीं हुआ । वह बहुत परेशान हो गया । डॉक्टर भी हैरान थे कि सारे प्रयत्न करने पर भी इसका फोड़ा क्यों ठीक नहीं होता ! आखिर एक डॉक्टर ने थककर रोगी से स्पष्ट कह दिया कि ''तुमने जरूर इस हाथ से कोई घोर पाप किया है, जिससे मेरी अनुभवसिद्ध औषधियाँ भी काम नहीं कर रही हैं । तुमको अल्लाह से अपना गुनाह बख्शवाना होगा ।'' उसको तुरंत याद आया कि उसने भक्त रामदास की मशीन चुरायी है, इसी पाप का फल वह भोग रहा है । कर्म का फल कभी हाथों-हाथ मिलता है तो कभी समय पाकर मिलता है, जैसे भीष्म पितामह को ७२ जन्मों के बाद मिला था ।

वह व्यक्ति उसी समय घर गया और मशीन लाकर रामदासजी को वापस देते हुए उनके चरणों में गिरकर माफी माँगने लगा : ''भगतजी ! मुझे क्षमा कर दीजिये । मैंने आपकी मशीन चुरायी थी । मुझे द्वेषवश आपका शांतिमय तथा संतोषपरायण जीवन अच्छा नहीं लगता था । अल्लाह ने मुझे सबक सिखा दिया है, अब कभी भी किसी भगवद्भक्त को सताने का मन में सोचूँगा तक नहीं ।'' इस प्रकार बोलते हुए वह फूट-फूटकर रोया । उसकी आँखों से पश्चात्ताप के आँसुओं की धाराएँ बहने लगीं ।

भक्त रामदास ने उसे उठाया और आँसू पोंछते हुए कहा : ''भाई ! पश्चात्ताप से सब पाप धुल जाते हैं, मन पवित्र हो जाता है । अपनी भूल जिसको समझ में आ जाय और जो की हुई गलती दुबारा न करने का प्रण कर ले, उसके पापों को भगवान क्षमा कर देते हैं । अब तुम शांतिपूर्वक घर जाओ और भगवान का भजन करना । परमात्मा परम दयालु हैं, वे सब ठीक कर देंगे ।''

उसी समय से उसे दर्द में आराम पड़ने लगा और कुछ ही दिनों में उसके हाथ का फोड़ा भी ठीक हो गया । फिर तो वह भक्त रामदास के पास आता और बड़े प्रेम से भगवान के लीला-पदों को सुनता और भगवत्प्रेम व भगवद्-आनंद में डूब जाता । इस प्रकार उसका पूरा जीवन ही बदल गया । उसके जीवन में रामायण का यह वचन प्रत्यक्ष हुआ :

**सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।**

**(श्री रामचरित. बा.कां. : २.५)** □

# सत्कर्म बनायें महान

(पूज्यश्री की दिव्य अमृतवाणी से)

**न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।**
**कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥**

'निःसंदेह कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किये नहीं रहता, क्योंकि सारा मनुष्य-समुदाय प्रकृतिजनित गुणों द्वारा परवश हुआ कर्म करने के लिए बाध्य किया जाता है ।' **(श्रीमद् भगवद्गीता : ३.५)**

कोई ऐसा कहे कि 'मैं जो कुछ करता हूँ वह अच्छा ही करता हूँ और आज तक मुझसे खराब कुछ भी हुआ ही नहीं ।' तो यह बात सम्भव नहीं है। जब तक कर्म करनेवाले में कर्तापन का भाव है, तब तक प्रकृति के गुणों के अधीन मिश्रित कर्म ही होंगे । कर्ता की प्रकृति सात्त्विक हो तो अच्छे कर्मों का प्रमाण ज्यादा होगा और खराब कर्मों का प्रमाण कम होगा । कर्ता की प्रकृति यदि तामसी हो तो खराब कर्मों का प्रमाण ज्यादा होगा और अच्छे कर्मों का प्रमाण नहीं जितना होगा । जब तक कर्म करनेवाले में कर्ताभाव है, तब तक कर्म के फल की चाह होगी और उसके कारण सुख-दुःख भी होगा । पुण्यात्मा इसलिए दुःखी होता है क़ि सब पुण्यमय कर्म नहीं कर सकता और पापी इसलिए दुःखी होता है कि सारी पापवासना पूरी नहीं कर सकता ।

जुन्नेद मियाँ मृत्युशय्या पर पड़े थे । आखिरी समय में मुल्ला-मौलवियों को बुलाया और कहा : ''आपकी हाजिरी में मैं खुदाताला से माफी माँगता हूँ ।''

'हे खुदाताला ! मुझे माफ कर देना । मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन न कर सका । तुम्हारे कहे अनुसार न चल सका परंतु मैं जैसा हूँ वैसा तुम्हारी शरण में हूँ । मुझे दोजख (नरक) से बचाना और बिहिश्त (स्वर्ग) में ले जाना । हे खुदा ! मैं तुम्हारा हूँ ।'

थोड़ी देर बाद वे पुनः कहने लगे : 'हे शैतान ! तू मुझे माफ कर देना क्योंकि मैं तुम्हारी बात भी पूरी न मान सका। तुम्हारे कहे अनुसार न चल सका । मैं जैसा भी हूँ पर तुम्हारा ही हूँ ।'

मुल्ला बोला : ''यह क्या बकवास कर रहे हो ! पहले खुदा से कहते हो कि तेरा हूँ, फिर शैतान से कहते हो कि तेरा हूँ। कुछ होश-हवास है भी या नहीं ?''

तब जुन्नेद मियाँ ने मुल्ला से कहा : ''मुल्ला ! बकवास तो आप करते हैं। आप ही बकवास बंद करें और पैसा लेकर रवाना हो जायें । मरना मुझे है, आपको नहीं । किसको पता कि मैं कहाँ जाऊँगा ! इसलिए दोनों ओर के मेरे संबंध को सँभालकर रखता हूँ । जीवन में कितने अच्छे कर्म किये और कितने खराब कर्म किये, इसका कुछ ख्याल न रखा । अब ज़ब मरना ही है तो आगे का ख्याल तो रखना ही पड़ेगा न !''

मनुष्य-जीवन के दौरान क्या करना चाहिए, खुद क्या कर रहे हैं, इसका कोई ख्याल ही नहीं रखता है। उलटे विचार से उलटे परिणाम और उलटे ही कर्म हुआ करते हैं। अभ्यास भी बिखरा हुआ और उलटा होता है, जिससे अच्छे कर्म नहीं सूझते । कई बार कोई अच्छा कार्य तो करते हैं परंतु कर्ताभाव और अहंकार आ जाता है तो अच्छे कर्म भी खराब हो जाते हैं । यदि अहंकाररहित होकर कर्म करें तो बाहर से खराब दिखनेवाले कर्म भी अच्छे होने लगते हैं।

हनुमानजी ने पूरी लंका जला डाली । उसमें कितनी ही जनहानि हुई होगी ! कितने ही लोगों का नुकसान हुआ होगा ! फिर भी हनुमानजी

पूजनीय हैं और हमारे हाथ से यदि एक चींटी भी मर जाय तो पाप लगता है क्योंकि हममें कर्ताभाव बना रहता है, जबकि हनुमानजी सेवा में रत हैं। उनके कर्तृत्व-भोक्तृत्वभाव का विलय हो गया है। उनको तो **'रामकाजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।'** जो कुछ करते हैं वह रामजी का कार्य समझकर करते हैं, रामजी की सेवा समझकर करते हैं। खुद कर्ता होकर कार्य नहीं करते वरन् कार्य होने देते हैं। श्रीरामचन्द्रजी का कार्य हनुमानजी अकर्ताभाव से करते हैं। सावधानी, उत्साह और कुशलता से करते हैं। असम्भव लगनेवाले कार्य को भी पुरुषार्थ करके पूरा करने में लग जाते हैं और यश-अपयश, विजय-पराजय - ये सब श्रीरामजी के चरणों में रखते जाते हैं।

आप भी राम के होकर, प्रभु के होकर कार्य करो तो कार्य में सफलता मिलेगी। कभी असफलता मिले तो भी हताशा नहीं होगी क्योंकि कर्ताभाव नहीं है।

**यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।**
**हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते॥**

'जिसको कर्म करने में अहंकार नहीं है और जिसकी बुद्धि फलभोग से लिप्त नहीं होती, वह इस लोक को मारकर भी मारता नहीं या उससे बद्ध नहीं होता है।' **(गीता : १८.१७)**

दिन के दौरान जो अच्छे कार्य करो उन्हें सोने से पूर्व याद करके प्रभु को अर्पण कर दो कि 'हे प्रभु ! जो कुछ भी अच्छे कर्म हुए वे तुम्हारी सृष्टि में, तुम्हारी ही सत्ता और चेतना से हुए हैं। वे सब तुम्हें अर्पण करता हूँ। **श्रीकृष्णार्पणमस्तु... हरिं शिवं अर्पणमस्तु।'**

यदि दिन के दौरान कुछ खराब हुआ हो तो उसका स्मरण करके प्रभु से प्रार्थना करो कि 'हे प्रभु ! मेरी वासनाओं के कारण, मेरे क्षुद्र अहंकार के कारण खराब कर्म हुए हैं। अब दुबारा ऐसी भूल न हो, वैसी सद्बुद्धि देना। अच्छा और खराब दोनों तुम्हारे चरणों में रखता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारा हूँ। तुम्हारे तत्त्व-स्वभाव को जानकर तुम्हारी-हमारी दूरी मिट जाय, ऐसी कृपा करना। **सोऽहम्... शिवोऽहम्... आनंदोऽहम्...'**

ऐसा अभ्यास तो सब कोई कर सकते हैं। प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना करके थोड़ी देर के लिए अपने श्वासोच्छ्वास को निहारो अथवा कंठकूप में अपने साकार इष्ट को निहारने और ध्यान करने का प्रयास करो अथवा तो निर्गुण, निराकार चैतन्य के चिंतन में तल्लीन हो जाओ। जो कुछ करो वह एकाग्रतापूर्वक करो। कंठकूप में धारणा करते-करते दो दिन में भी स्वप्न में इष्ट व गुरु के स्पष्ट दर्शन व वार्तालाप हो सकता है। अधिक-से-अधिक ९० दिन में। सुबह उठकर भी वही ध्यान करो। छः महीने ऐसा अभ्यास करने से योगी पुरुषों को जो योगनिद्रा में समाधि-सुख मिलता है, उस समाधि-सुख के द्वार तुम्हारे लिए भी खुल जायेंगे। यह अभ्यास की बलिहारी है।

पूर्वजन्म के दासीपुत्र के रूप में माने जानेवाले नारदजी कभी वेदव्यासजी को और कभी श्रीकृष्ण को भी सलाह देनेवाले देवर्षि नारद हो सकते हैं। छोटे-में-छोटा तुच्छ कीड़ा अभ्यास के बल से मैत्रेय ऋषि हो सकता है तो तुम भी जरूर महान बन सकते हो। सत्कर्म और अभ्यास के बल से आत्मज्ञान को पा सकते हो। ☐

जैसे बड़े होते ही बचपन के खेलकूद छोड़ देते हो, वैसे ही संसार के खेलकूद छोड़कर आत्मानंद का उपभोग करना चाहिए। जैसे अन्न व जल का सेवन करते हो, वैसे ही आत्मचिंतन का निरंतर सेवन करना चाहिए। भोजन ठीक से होता है तो तृप्ति की डकार आती है, वैसे ही यथार्थ आत्मचिंतन होते ही आत्मानुभव की डकार आयेगी, आत्मानंद में मस्त होंगे। आत्मज्ञान के सिवा शांति का और कोई उपाय नहीं।

**(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवन रसायन' से)**

# इंदिरा एकादशी

**✻ इंदिरा एकादशी (भागवत) : २४ सितम्बर ✻**

युधिष्ठिरजी ने पूछा : हे मधुसूदन ! कृपा करके मुझे यह बताइये कि आश्विन के कृष्ण पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ?

भगवान श्रीकृष्ण बोले : राजन् ! आश्विन (गुजरात-महाराष्ट्र के अनुसार भाद्रपद) के कृष्ण पक्ष में 'इंदिरा' नाम की एकादशी होती है। उसके व्रत के प्रभाव से बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है । नीच योनि में पड़े हुए पितरों को भी यह एकादशी सद्गति देनेवाली है।

राजन् ! पूर्वकाल की बात है । सत्ययुग में इन्द्रसेन नाम से विख्यात एक राजकुमार थे, जो माहिष्मतीपुरी के राजा होकर धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करते थे। उनका यश सब ओर फैल चुका था।

राजा इन्द्रसेन भगवान विष्णु की भक्ति में तत्पर हो गोविंद के मोक्षदायक नामों का जप करते हुए समय व्यतीत करते थे और विधिपूर्वक अध्यात्मतत्त्व के चिंतन में संलग्न रहते थे। एक दिन वे राजसभा में सुखपूर्वक बैठे हुए थे, इतने में देवर्षि नारद आकाश से उतरकर वहाँ आ पहुँचे। उन्हें आया देख राजा हाथ जोड़कर खड़े हो गये और विधिपूर्वक पूजन करके उन्हें आसन पर बिठाया । इसके बाद वे इस प्रकार बोले : ''मुनिश्रेष्ठ ! आपकी कृपा से मेरा सर्वथा कुशल है । आज आपके दर्शन से मेरी सम्पूर्ण यज्ञ-क्रियाएँ सफल हो गयीं । देवर्षे ! अपने आगमन का कारण बताकर मुझ पर कृपा करें।''

नारदजी ने कहा : ''नृपश्रेष्ठ ! सुनो, मेरी बात तुम्हें आश्चर्य में डालनेवाली है । मैं ब्रह्मलोक से यमलोक में गया था। वहाँ एक श्रेष्ठ आसन पर बैठा और यमराज ने भक्तिपूर्वक मेरी पूजा की। उस समय यमराज की सभा में मैंने तुम्हारे पिता को भी देखा था। वे व्रतभंग के दोष से वहाँ आये थे। राजन् ! उन्होंने तुमसे कहने के लिए एक संदेश दिया है, उसे सुनो । उन्होंने कहा है : 'बेटा ! मुझे 'इंदिरा एकादशी' के व्रत का पुण्य देकर स्वर्ग में भेजो।' उनका यह संदेश लेकर मैं तुम्हारे पास आया हूँ। राजन् ! अपने पिता को स्वर्गलोक की प्राप्ति कराने के लिए 'इंदिरा एकादशी' का व्रत करो।''

राजा ने पूछा : ''भगवन् ! कृपा करके 'इंदिरा एकादशी' के व्रत के विषय में बताइये। किस पक्ष में, किस तिथि को और किस विधि से यह व्रत करना चाहिए ?''

नारदजी ने कहा : ''राजेन्द्र ! सुनो, मैं तुम्हें इस व्रत की शुभकारक विधि बतलाता हूँ। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में दशमी के उत्तम दिन श्रद्धायुक्त चित्त से प्रातःकाल स्नान करो। फिर मध्याह्नकाल में स्नान करके एकाग्रचित्त हो एक समय भोजन करो तथा रात्रि में भूमि पर सोओ । निर्मल प्रभात होने पर एकादशी के दिन मंजन करके मुँह धोओ और स्नान करो । इसके बाद भक्तिभाव से निम्नांकित मंत्र पढ़ते हुए उपवास का नियम ग्रहण करो :

**अद्य स्थित्वा निराहारः सर्वभोगविवर्जितः ।**
**श्वो भोक्ष्ये पुण्डरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत ॥**

'कमलनयन भगवान नारायण ! आज मैं सब भोगों से अलग हो निराहार रहकर कल भोजन करूँगा। अच्युत ! आप मुझे शरण दें।'

**(पद्म पुराण, उ.खंड : ६०.२३)**

इस प्रकार नियम ग्रहण करके मध्याह्नकाल में पितरों की प्रसन्नता के लिए शालग्राम-शिला के सम्मुख विधिपूर्वक श्राद्ध करो तथा दक्षिणा से ब्राह्मणों का सत्कार करके उन्हें भोजन कराओ।

पितरों को दिये हुए अन्नमय पिण्ड को सूँघकर गाय को खिला दो। फिर धूप और गंध आदि से भगवान हृषिकेश का पूजन करके रात्रि में उनके समीप जागरण करो। तत्पश्चात् सवेरा होने पर द्वादशी के दिन पुनः भक्तिपूर्वक श्रीहरि की पूजा करो। उसके बाद ब्राह्मणों को भोजन कराके भाई-बंधु, नाती और पुत्र आदि के साथ स्वयं मौन होकर भोजन करो।

राजन् ! इस विधि से आलस्यरहित होकर यह व्रत करो। इससे तुम्हारे पितर भगवान विष्णु के वैकुण्ठ धाम में चले जायेंगे।''

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : राजन् ! राजा इन्द्रसेन से ऐसा कहकर देवर्षि नारद अंतर्धान हो गये। राजा ने उनकी बतायी हुई विधि से अंतःपुर की रानियों, पुत्रों और भृत्यों सहित उस उत्तम व्रत का अनुष्ठान किया।

कुंतीनंदन ! व्रत पूर्ण होने पर आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। इन्द्रसेन के पिता गरुड़ पर आरूढ़ होकर श्रीविष्णुधाम को चले गये और इन्द्रसेन भी निष्कण्टक राज्य का उपभोग करके अपने पुत्र को राजसिंहासन पर बिठाकर स्वयं स्वर्गलोक को चले गये। इस प्रकार मैंने तुम्हारे सामने 'इंदिरा एकादशी' व्रत के माहात्म्य का वर्णन किया है। इसको पढ़ने और सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।

# पापांकुशा एकादशी

**(७ अक्टूबर २०११)**

युधिष्ठिर ने पूछा : मधुसूदन ! अब आप कृपा करके यह बताइये कि आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में किस नाम की एकादशी होती है और उसका माहात्म्य क्या हैं ?

भगवान श्रीकृष्ण बोले : राजन् ! आश्विन के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है, वह 'पापांकुशा' नाम से विख्यात है।

वह सब पापों को हरनेवाली, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करनेवाली, शरीर को निरोग बनानेवाली तथा सुंदर स्त्री, धन एवं मित्र देनेवाली है। यदि अन्य कार्य के प्रसंग से भी मनुष्य इस एकमात्र एकादशी का उपवास कर ले तो उसे कभी यम-यातना नहीं प्राप्त होती।

राजन् ! एकादशी के दिन उपवास और रात्रि-जागरण करनेवाले मनुष्य अनायास ही दिव्य रूपधारी, चतुर्भुजी, गरुड़ की ध्वजा से युक्त, हार से सुशोभित और पीताम्बरधारी होकर भगवान विष्णु के धाम को जाते हैं। राजेन्द्र ! ऐसे पुरुष मातृपक्ष, पितृपक्ष तथा पत्नी के पक्ष की दस-दस पीढ़ियों का उद्धार कर देते हैं।

एकादशी के दिन सम्पूर्ण मनोरथ की प्राप्ति के लिए मुझ वासुदेव का पूजन करना चाहिए। जितेन्द्रिय मुनि चिरकाल तक कठोर तपस्या करके जिस फल को प्राप्त करता है, वह फल उस दिन भगवान गरुड़ध्वज को प्रणाम करने से ही मिल जाता है।

जो पुरुष उस दिन सुवर्ण, तिल, भूमि, गौ, अन्न, जल, जूते और छाते का दान करता है, वह कभी यमराज को नहीं देखता। नृपश्रेष्ठ ! दरिद्र पुरुष को भी चाहिए कि वह स्नान, जप-ध्यान आदि करने के बाद यथाशक्ति होम, यज्ञ तथा दान वगैरह करके अपने प्रत्येक दिन को सफल बनाये।

जो होम, स्नान, जप, ध्यान और यज्ञ आदि पुण्यकर्म करनेवाले हैं, उन्हें भयंकर यम-यातना नहीं देखनी पड़ती। लोक में जो मानव दीर्घायु, धनाढ्य, कुलीन और निरोग देखे जाते हैं, वे पहले के पुण्यात्मा हैं। पुण्यकर्ता पुरुष ऐसे ही देखे जाते हैं। इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ, मनुष्य पाप करने से दुर्गति में पड़ते हैं और धर्मकार्यों से स्वर्ग में जाते हैं।

राजन् ! तुमने मुझसे जो कुछ पूछा था, उसके अनुसार 'पापांकुशा एकादशी' के माहात्म्य का मैंने वर्णन किया। **(पद्म पुराण, उ.खंड)** ❐

# अपना पुरुषार्थ लघु उनकी कृपा गुरु

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

सरल-में-सरल एक चीज है और वही चीज कठिन-में-कठिन है । सरल भी इतनी कि साधारण-से-साधारण व्यक्ति भी उसको कर सकता है और कठिन भी इतनी कि बड़े-बड़े महारथी भी हार जाते हैं । वह क्या है ?

'भक्ति ।'

**रघुपति भगति करत कठिनाई ।**

भगवान की भक्ति बड़ी कठिन है । युद्ध कर लेंगे, राज कर लेंगे, लड़ाई में मर जायेंगे लेकिन भक्ति नहीं कर पायेंगे... मनमुख व्यक्तियों के लिए यह इतनी कठिन है और जो सत्संगी हैं उनके लिए तो - **कहहु भगति पथ कवन प्रयासा ।**

भक्तिमार्ग में क्या प्रयास है ! योग में तो समाधि लगानी पड़े, उपवास करना पड़े, यह करना पड़े, वह करना पड़े... लेकिन भक्ति में तो बस भगवान का सुमिरन !

**जोग न मख जप तप उपवासा ।**
**सरल सुभाव न मन कुटिलाई ।**
**जथा लाभ संतोष सदाई ।**

हो गयी भक्ति ! इतनी सरल है ।

**मोर दास कहाइ नर आसा ।**
**करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा ।**

**(श्री रामचरित. उ.कां. : ४५.१-२)**

भगवान की भक्ति तो भाई पुरुषार्थहीन, बुद्धिहीन, साधनहीन पशु भी कर सकते हैं ! बंदर ने भी भक्ति की, ऊँट और कुत्ते भी भक्ति करने में सफल हो जाते हैं । भील और वृक्ष भी भगवान के भक्त हो गये और कुब्जा भी भगवान की भक्त बन गयी । कुब्जा ने कोई साधन नहीं किया ।

भक्ति सरल भी है और कठिन भी है । तीसमारखाँ के लिए बड़ी कठिन है । भगवान की भक्ति पुरुषार्थ से नहीं मिलती । जो आपके पुरुषार्थ से मिलता है वह नष्ट हो जायेगा । चाहे धन मिले चाहे स्वास्थ्य, चाहे सुंदरी मिले चाहे सुंदरा, उसे आप छोड़ जायेंगे या छूट जायेगा । कर्म से जो कुछ भी मिलेगा वह छूट जायेगा । भक्ति कर्म का फल नहीं है ।

एक छोटी-सी घटना सुनाता हूँ । हनुमानजी सीताजी को खोजने के लिए लंका पहुँचे । रातभर घूमे, प्रभात को भी घूमे, सारी लंका छान मारी लेकिन सीताजी नहीं मिलीं । सीताजी कौन हैं ? भक्ति, ब्रह्मविद्या ही सीताजी हैं और रामजी हैं भगवान, ब्रह्म । हनुमानजी ने पुरुषार्थ किया लेकिन भक्ति नहीं मिली, ब्रह्मविद्या नहीं मिली । जब विभीषण मिले तो उन्होंने बताया : ''सीताजी लंका की अशोक वाटिका में हैं ।''

हनुमानजी बोले : ''मैंने तो पूरी लंका देखी और अशोक वाटिका भी तो लंका में ही है, मुझे तो सीताजी नहीं दिखीं !''

सीताजी कैसे मिलेंगी ? पुरुषार्थ से नहीं मिलेंगी, युक्ति से मिलेंगी । सीताजी को जाननेवाले से हनुमानजी को सीताजी का पता चला । हनुमानजी जैसा पुरुषार्थ तुम्हारे-हमारे में नहीं है । तो **हम पुरुषार्थ से भगवान को या भगवान की भक्ति को नहीं पा सकते हैं, युक्तिदाता सद्गुरु का इशारा मिले तो भक्ति और भगवान को पाना सुगम हो जाता है ।** ❑

## वीर्यरक्षा के उपाय

### ब्राह्ममुहूर्त में उठो

स्वप्नदोष अधिकांशतः रात्रि के अंतिम प्रहर में हुआ करता है । इसलिए प्रातः चार-पाँच बजे यानी ब्राह्ममुहूर्त में ही शय्या का त्याग कर दो । **जो लोग प्रातःकाल देरी तक सोते रहते हैं, उनका जीवन निस्तेज हो जाता है ।**

### दुर्व्यसनों से दूर रहो

शराब एवं बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू का सेवन मनुष्य की कामवासना को उद्दीप्त करता है। 'कुरान शरीफ' के अल्लाहपाक त्रिकोल रोशल के सिपारा में लिखा है कि 'शैतान का भड़काया हुआ मनुष्य ऐसी नशीली चीजों का उपयोग करता है । ऐसे व्यक्ति से अल्लाह दूर रहता है क्योंकि यह काम शैतान का है और शैतान उस आदमी को जहन्नुम में ले जाता है।' नशीली वस्तुओं के सेवन से फेफड़े व हृदय कमजोर हो जाते हैं, सहनशक्ति घट जाती है और आयुष्य भी कम हो जाता है । अमेरिकी डॉक्टरों ने खोज करके बताया है कि नशीली वस्तुओं के सेवन से कामभाव उत्तेजित होने पर वीर्य पतला व कमजोर पड़ जाता है ।

### सत्संग करो

आप सत्संग नहीं करोगे तो कुसंग अवश्य होगा, इसलिए मन, वचन, कर्म से सदैव सत्संग का ही सेवन करो । जब-जब चित्त में पतित विचार डेरा जमाने लगें, तब-तब तुरंत सचेत हो जाओ और वह स्थान छोड़कर पहुँच जाओ किसी सत्संग के वातावरण में, किसी सन्मित्र या सत्पुरुष के सान्निध्य में । वहाँ वे कामी विचार बिखर जायेंगे और आपका तन-मन पवित्र हो जायेगा । यदि ऐसा नहीं किया तो वे पतित विचार आपका पतन किये बिना नहीं छोड़ेंगे क्योंकि जो मन में होता है देर-सवेर उसीके अनुसार बाहर की क्रिया होती है । फिर तुम पछताओगे कि हाय ! यह मुझसे क्या हो गया !

पानी का स्वभाव है नीचे की ओर बहना, वैसे ही मन का स्वभाव है पतन की ओर सुगमता से बढ़ना । मन हमेशा धोखा देता है । वह विषयों की ओर खींचता है, कुसंगति में सार दिखाता है लेकिन वह पतन का रास्ता है । कुसंगति में कितना ही आकर्षण हो मगर...

**भूलकर भी उन खुशियों से मत खेलो ।**
**जिनके पीछे लगी हों ग़म की कतारें ॥**

अभी तक गत जीवन में आपका कितना भी पतन हो चुका हो, फिर भी सत्संगति करो । आपके उत्थान की अभी भी गुंजाइश है । बड़े-बड़े दुर्जन भी सत्संग से सज्जन बन गये हैं ।

**सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।**

सत्संग से वंचित रहना अपने पतन को आमंत्रित करना है । इसलिए अपने नेत्र, कर्ण, त्वचा आदि सभीको सत्संगरूपी गंगा में स्नान कराते रहो, जिससे काम-विकार आप पर हावी न हो सके ।

### शुभ संकल्प करो

'हम ब्रह्मचर्य का पालन कैसे कर सकते हैं ? कभी-कभी बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इस रास्ते पर से फिसल जाते हैं ...' - इस प्रकार के हीन विचारों को तिलांजलि दे दो और अपने संकल्पबल को बढ़ाओ । शुभ संकल्प करो । जैसा आप सोचते हो, (शेष पृष्ठ २६ पर)

## सेवा भी देते और सामर्थ्य भी

एक दिन जनार्दन स्वामी ने एकनाथजी को नींद से जगाते हुए कहा : ''उठो बेटा ! आज गुरुवार है, आज का दिन सद्गुरु-स्मरण में व्यतीत करना । मैं तुम्हें लेकर शूलभंजन पर्वत पर चलता हूँ । मेरे गुरुजी की मौज हुई तो आज तुमको भी उनके दर्शन हो जायेंगे ।''

एकनाथजी को साथ में ले जाते हुए रास्ते में जनार्दन स्वामी बोले : ''बेटा ! तुम्हारे लिए मैंने एक सेवा खोज रखी है । भागवत ग्रंथ को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए इस महान ग्रंथ का मराठी में अनुवाद करना है ।''

एकनाथजी बोले : ''मैं तो अभी छोटा हूँ और पूर्णता को भी नहीं पाया । मैं कैसे कर सकता हूँ ?''

''अभी नहीं करना है । जैसे ज्ञानेश्वरजी ने तपस्या की उसी प्रकार तपस्या करके यह काम तुम्हें ही करना है । इसके लिए तुम्हें जो शक्ति चाहिए वह मेरे सद्गुरुदेव देंगे । इसीलिए तो मैं तुम्हें ऊपर पहाड़ी पर उनके पास ले जा रहा हूँ ।''

एकनाथजी : ''गुरुदेव ! मुझे उनका दर्शन होगा ?''

जनार्दन स्वामी : ''वे तो किसी भी रूप में प्रकट हो सकते हैं । अगर तुम उनको पहचान लोगे तो वे तुमको मूल स्वरूप में दर्शन देंगे ।''

थोड़ी हीं देर में वे उस उदुंबर वृक्ष (गूलर) के नीचे पहुँचे, जो जनार्दन स्वामी की साधना का स्थल था । जनार्दन स्वामीजी पद्मासन लगाकर ध्यान में बैठ गये । एकनाथजी भी अपने सद्गुरुदेव के श्रीचरणों में बैठकर उनकी तरफ प्रेम से एकटक देख रहे थे । इतने में स्वामीजी का पूरा शरीर हिलने लगा । श्वासोच्छ्वास की गति बढ़ गयी और उनके मुख से 'गुरुदेव दत्त, गुरुदेव दत्त, गुरुदेव दत्त' निकलने लगा ।

इतने में बगल की झाड़ी से किसीके पैरों के चलने की तथा चिमटे की आवाज आने लगी । ऐसा लगा मानो कोई ऊपर आ रहा है । उसी दिशा से लोबान की पवित्र गंध वातावरण में फैलने लगी । एकनाथजी उस दिशा में देखने लगे । सिर पर मैला कपड़ा, शरीर पर जगह-जगह फटी हुई कफनी, पैरों में जगह-जगह जख्म हैं, उस पर फटे कपड़े बाँध रखे हैं । नंगे पैर, एक हाथ में चिमटा, दूसरे हाथ में कटोरा लिये एक वृद्ध फकीर आ रहे हैं । उनके पीछे तीन कुत्ते भी थे । फकीर जनार्दनजी के सामने आकर खड़े हो गये । एकनाथजी की तरफ एक नजर डालकर फकीर ने जनार्दनजी को कहा : ''क्या जुबान बख्शी है परवरदिगार ने तुझको । मुँह मत बंद करो और जुबान चलाओ ।''

जनार्दन स्वामी ने उनके चरणों में माथा टेका । गूढ़ हास्य करके फकीर ने कहा :

**''खाने से भूख बढ़ी । पीने से प्यास बढ़ी ।**
**दरसन से आस बढ़ी । सोते-सोते जागो ।**
**अपने-आपसे भागो । आओ साँईं ।**
**छुटकारे की खीर मेरे साथ खाओ॥''**

जनार्दन स्वामी ने कहा : ''अपने-आपसे कैसे भागूँ ? दूध बिना खीर क्या माँगूँ ?''

फकीर ने कहा : ''कुत्ती का दूध और भीख की रोटी, मन्नत की शक्कर ऊपर डालो । ऊपरवाला भी खुश, खानेवाला भी खुश !''

फकीर के पास खड़ी कुतिया का दूध निकालकर जनार्दन स्वामीजी ने कटोरा भर लिया । अपनी फटी झोली से फकीर ने बासी रोटी निकालकर कटोरी में भिगो दी । दोनों आनंद से

दूध-रोटी खाने लगे । भोजन के बाद जनार्दन स्वामी ने एकनाथजी को इशारा करके कटोरा धो के लाने को कहा ।

सद्गुरु की हर क्रिया को न्यारी समझनेवाले, महापुरुषों की लीला में मानुषी मति का उपयोग न करके श्रद्धा की आँखों से देखनेवाले एकनाथजी ने कटोरे में झरने से थोड़ा पानी डाला और परम पवित्र, देवदुर्लभ सद्गुरु की उच्छिष्ट प्रसादी को अहोभाव से गद्गद होते हुए पी गये ।

उसके बाद एकनाथजी को समाधि लग गयी । फकीर ने एकनाथजी को उठाते हुए कहा : ''उठ बेटा ! उठ, किधर से आया ? किधर जाना है ?'' एकनाथजी समाधि में ही रहे ।

फकीर ने फिर कहा : ''बोल साँईं बोल ! जुबान चलाओ फकीर ! जुबान चलाओ ।''

एकनाथजी समाधि-अवस्था में ही थे । फकीर ने उनके मस्तक पर अपने चिमटे का धीरे से स्पर्श किया और अपना भजन गाने लगे : **''जुबान चलाओ फकीर ! जुबान चलाओ ।''** एकनाथजी के अंतर में ज्ञान-सूर्य प्रकाशित हुआ । फकीर के पैर पकड़कर एकनाथजी ने कहा : ''पहचाना ! आदिनाथ पहचाना !! माता अनसूया के लाल, त्रिगुणरूप आप ही हो । हे देवेश्वर ! अब कृपा करें । अपने मूल स्वरूप का दर्शन देकर इस बालक को कृतार्थ करें ।'' फकीर अदृश्य हो गये और वहाँ पर तीन सिर, छः हाथोंवाले, पैरों में खड़ाऊँ पहने हुए कौपीनधारी दत्तात्रेयजी प्रकट हुए । उन्होंने एकनाथजी को उठाकर उनके सिर पर अपना वरदहस्त रखा और जनार्दन स्वामी से बोले : ''जनार्दन ! तुम्हारा यह शिष्य अवतारी पुरुष है । यह खुद तो मुक्ति पायेगा और लोगों को भी भक्ति का रास्ता दिखायेगा । जीवों का उद्धार करेगा ।''

कैसे महान होते हैं सद्गुरु कि सेवा देकर हमारा कल्याण तो करते हैं परंतु जो सेवा देते हैं उसे करने की शक्ति भी देते हैं ! ❑

# साँईं ने कहा था...

पूज्य बापूजी अपनी मातुश्री पूजनीया अम्मा को ईश्वरप्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने में कैसे मदद करते थे - इस विषय को उजागर करते हुए स्वयं अम्माजी बताया करती थीं :

''एक बार समाचार मिला कि साँईं (बापूजी) उत्कण्ठेश्वर में हैं तो मैं बहू को साथ लेकर साँईं के दर्शन करने गयी । उस दिन गाँव में लाइट नहीं थी । साँईं तो एकदम फक्कड़ अवस्था में ध्यान-समाधि में निमग्न थे । हमने देखा कि आगे-पीछे साँप घूम रहे हैं । हम भी वहीं कुछ अंतर पर साधना करने बैठ गयीं । वहाँ लोग पूछने लगे कि 'आप साँईं की क्या लगती हैं ?' जब लोग मुझसे पूछते तो मुझे साँईं की बात याद आती । साँईं ने मुझे मना कर रखा था कि 'लोगों को नहीं बताना कि मेरा बेटा है, अन्यथा लोग आपको आदर-भाव देने लग जायेंगे, पूजा करने लग जायेंगे, इससे अहं जगने का खतरा रहता है । इसलिए जब तक पूर्णता को प्राप्त न होओ तब तक इन सब बातों से बचते रहना चाहिए ।' मैं कभी भी, कहीं भी नहीं बताती थी । मैं कहती कि साँईं मेरे कुछ नहीं लगते ।''

गुरुआज्ञा-पालन में कैसी निष्ठा ! कैसी सरलता !! न कोई आडम्बर, न कोई दम्भ ! बापूजी ने कह दिया तो अक्षरशः पालन किया । अम्मा गुरुआज्ञा-पालन में इतनी तत्पर थीं, तभी तो लाखों वर्ष पुराना इतिहास फिर से नया बना दिया । जैसे माता देवहूति ने कपिल भगवान, जो कि उनके पुत्र थे, उनको गुरुरूप में निहारकर गुरुतत्त्व में स्थिति प्राप्त कर ली, वैसे ही अम्मा ने भी पूज्य बापूजी में गुरुभाव रखकर गुरुतत्त्व में स्थिति प्राप्त कर ली ।

इस प्रकार अम्मा गुरुआज्ञा-पालन में तत्पर रहीं और बाह्य बड़प्पन से बचीं तो इतनी ऊँचाई पा ली जो बड़े-बड़े योगियों को भी दुर्लभ है ! उनका पुण्यमय, पावन स्मरण करके हम भी धनभागी हो रहे हैं । ❑

## भगवान का उद्देश्य

- पूज्य बापूजी

जैसे कोई फैक्ट्री बनाता है तो उद्देश्य पैसा कमाना होता है, कोई चुनाव लड़ता है तो उद्देश्य पद का होता है, ऐसे ही भगवान का उद्देश्य क्या है ?

भगवान ने हमें दास बनाने के लिए अथवा संसारी पिट्ठू बनने के लिए जन्म नहीं दिया। हमने अपनी अक्ल-होशियारी से, अपने बलबूते से यह शरीर नहीं बनाया । हमने अपने-आप यह नहीं रचा है और शरीर जिनसे रचा गया वे हमारी अपनी वस्तुएँ नहीं हैं । यह सृष्टिकर्ता की सृष्टि-प्रक्रिया की व्यवस्था है । तो क्या उद्देश्य होगा उसका, जिसने शरीर दिया है ?

उस शरीर को पालने की जिम्मेदारी भी होती है । हम जन्मेंगे तो क्या पियेंगे, क्या खायेंगे, कैसे मिलेगा इसकी न हमने, न माँ-बाप ने चिंता की । तो शरीर को पोषित करने की व्यवस्था की जिम्मेदारी भगवान की है, बिल्कुल सच्ची बात है। अन्न, जल और श्वास से हमारा निर्वाह होता है, उस निर्वाह की व्यवस्था ईश्वर ने अपने जिम्मे ले रखी है । किंतु वासना-निर्वाह हो, जैसे - कपड़े हों तो ऐसे हों, आवास हो तो ऐसा बढ़िया हो - इस वासनापूर्ति का उसने ठेका नहीं ले रखा। निर्वाह का उसका ठेका है और निर्वाह सभीका होता है, अनपढ़ का भी, पढ़े हुए का भी । पुण्यात्मा का और पापी का भी निर्वाह होता है । शरीर का निर्वाह सहज में होता है। इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए । 'बेटी का क्या होगा, बेटे का क्या होगा, हमारा क्या होगा ?...' निर्वाह की जिम्मेदारी ईश्वर की है। ईश्वर का उद्देश्य है कि 'हमारा जीवन रसमय, सुखमय एवं तृप्त हो ।' जैसे बच्चा दूध पीकर तृप्त होता है । मनुष्य अन्न और गाय-भैंस चारा खाकर तृप्त होते हैं । तो निर्वाह से तृप्ति की जिम्मेदारी ईश्वर की है। ऐसे ही हम अपनी दुर्वासनाओं से बचने के लिए अगर ईश्वर-सत्ता को स्वीकार करें, ईश्वर-करुणा को स्वीकार करें, ईश्वर के उद्देश्य में हम अपनी 'हाँ' मिला दें तो मुक्ति पाना सहज है । शराबी, जुआरी, भँगेड़ी अपने संग में आनेवाले को अपने रंग से रँग डालते हैं, ऐसे ही ईश्वर मुक्त हैं, आनंदस्वरूप हैं, उनका चिंतन करनेवाला भी मुक्तात्मा, आनंदस्वरूप हो जाता है । हम अपनी तरफ से बाधा छोड़ दें तो मुक्ति तो मुफ्त में ही है।

**प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।**
**मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥**

**(गीता : ६.१४)**

प्रशांतात्मा 'प्र' उपसर्ग है - आधिभौतिक, आधिदैविक व आध्यात्मिक - ये मानसिक शांतियाँ नहीं, परम शांति मिल जाती है।

जैसे ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम में विद्या के लिए ठहरता है और फिर सेवा करता है तथा विद्या के लिए तत्पर होता है। ऐसे ही भगवान की जो ब्रह्मविद्या है, भगवान हमें जो ब्रह्मविद्या देना चाहते हैं, प्रेमाभक्ति के द्वारा, ज्ञानयोग के द्वारा, सेवायोग के द्वारा, उसमें हम अड़चन न बनें। हम अपनी कल्पना न करें कि 'भगवान ऐसे हैं अथवा भगवान ऐसा कर दें, ऐसा दे दें।' नहीं-नहीं, 'तेरी मर्जी पूरण हो। वाह प्रभु ! वाह !!' अपमान हो गया, वाह ! अनुकूलता आ गयी, वाह ! प्रतिकूलता आ गयी, वाह ! थोड़े दिन यह प्रयोग करके देखो, आपको

लगेगा कि 'हम तो खामखाह परेशान हो रहे थे।' यशोदा यश दे रही है ठाकुरजी को। नंदबाबा विवेक हैं तो यशोदाजी यशदात्री हैं। विवेक का तो हाथ पकड़ते हैं श्रीकृष्ण लेकिन यशदात्री मति के तो हृदय से लगते हैं। यशोदा कृष्ण को हृदय से लगाती रहती हैं। आप ईश्वर की 'हाँ' में 'हाँ' करते जाओ। यश उसे देते जाओ, 'वाह प्रभु ! बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।' तो आपके हृदय से भगवान चिपके रहेंगे। कठिन नहीं है। कठिनाई, अड़चन तो तब बनती है ज़ब इस बदलनेवाले मिथ्या व्यवहार, मिथ्या जगत को सच्चा मानते हैं और अबदल अंतरात्मा कृष्ण को दूर मानते हैं, दो हाथ-पैरवाला मानते हैं; तब हम अड़चन की तानाबुनी करते हैं।

गोपियों का क्या भाग्य रहा होगा ! अरे, हम भी तो ग्वाल-गोपियाँ ही हैं। 'गो' माने इन्द्रियाँ। इन्द्रियों के द्वारा जो भगवद्रस पी ले वह गोपी है और गोप है। योगी समाधि से शांति-रस पीता है, ध्यान-रस पीता है लेकिन जो भगवान को धन्यवाद देकर अपनी पकड़, वासना छोड़ देता है वह गोपी है। अभी आप ईश्वर को धन्यवाद देते जाओ : 'क्या तेरी लीला है ! क्या तेरा आनंद है !' और 'तेरा-तेरा' अभी कह रहे हैं, कुछ समय बीतेगा तो अपना 'मैं'पन मिटेगा तो ईश्वर का 'तेरा'पन भी मिटेगा। हम न तुम, दफ्तर गुम ! दूरी मिट जायेगी। साधन में शुरुआत में 'वे भगवान हैं, दयालु हैं, वे ऐसे हैं', तृतीय पुरुष सर्वनाम चलता है। फिर द्वितीय पुरुष सर्वनाम - 'तुम दयालु हो, तुम ऐसे हो, तुम मेरे हो' और फिर आगे चलकर 'तुम-तुम' क्या, हम न तुम दफ्तर गुम... 'वह मेरा ही स्वरूप है।'

**सौ बार तेरा दामन, हाथों में मेरे आया।**
**जब आँख खुली देखा, अपना ही गिरेबाँ है॥**

आपका भाव उस रूप में हो जाता है। भाव की गहराई में जाओ तो आपका परमेश्वर ही आपका आत्मा है। दूर नहीं, दुर्लभ नहीं !

आप केवल ठान लो। आप ठान लो कि 'यह शरीर हम नहीं हैं।' वास्तव में ज़ब तुम किसीको देखते हो तो शरीर दिखता है कि अविनाशी तत्त्व ! तो हमको-आपको मानना पड़ेगा कि शरीर दिखता है। भगवान कहते हैं कि 'शरीर को जिससे देखते हो वह 'मैं' हूँ। कितना निकट हूँ ! कहाँ रहा मैं तुमसे दूर !' ऐसे ही आप भगवान को देखते हो कि भगवान की मूर्ति को देखते हो ? भगवान की मूर्ति जिससे दिखती है वही तो भगवान है ! वह छुपाछुपी के खेल में दूर लगता है वरना **हाजरा-हुजूर, जागंदी ज्योत...** ज्ञानस्वरूप है, चैतन्यस्वरूप है, आनंदस्वरूप है, अपना-आपा है और वह अपने-आप ही की याद दिलाता रहता है। जैसे निर्वाह की उसकी जिम्मेदारी है, ऐसे अपने स्वरूप का प्रसाद देने की भी उसीकी जिम्मेदारी है। जैसे माँ-बाप की जिम्मेदारी होती है न, कि बच्चे का पालन-पोषण करें। केवल पालन-पोषण नहीं, पढ़ाना-लिखाना भी वे करते हैं। ऐसे ही अपनी विद्या देने की भी परमात्मा की अपनी जिम्मेदारी है। हम उसके हैं। हम अपनी तरफ से जब वासना के आवेग में आते हैं तो वह बोलता है, 'अच्छा, कर लो बेटे !' जब समझते हैं कि अपनी वासना के चक्कर में आ-आकर कीट-पतंग बनना, नीच योनियों में जाना है। 'नहीं बाबा ! तेरी मर्जी पूरण हो। ऐ वासना दूर हट !...' वासना को हटाने के लिए ऊँची वासना की जाती है। 'यह मिल जाय, वह मिल जाय...' - इस वासना को मिटाने के लिए 'हे परमेश्वर ! मेरे ऐसे दिन कब आयेंगे कि मैं तुममें विश्रांति पाऊँगा ?' ऐसे काँटे से काँटा निकालो। सत्-चित्-आनंदस्वरूप परमात्मा की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाकर, उनके उद्देश्य में अपना उद्देश्य मिलाकर मुक्तात्मा हो जाओ, यही भगवान का उद्देश्य है। ❑

# संसार-आसक्तिरूपी रोग के औषध : आत्मवेत्ता संत

गरुड़जी ने भगवान से कहा : ''हे दयासिंधो ! अज्ञान के कारण जीव जन्म-मरणरूपी संसारचक्र में पड़ता है, अनंत बार उत्पन्न होता है और मरता है । इस शृंखला का कोई अंत नहीं है । हे प्रभो ! किस उपाय से इस जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त हो सकती है ?''

श्री भगवान ने कहा : ''हे गरुड़ ! यह संसार दुःख का मूल कारण है, इसलिए इस संसार से जिसका संबंध है वही दुःखी है और जिसने इसका (जगत की सत्यता व आसक्ति का) त्याग किया वही मनुष्य सुखी है । दूसरा कोई भी सुखी नहीं है । यह संसार सभी प्रकार के दुःखों का उत्पत्ति-स्थान है, सभी आपत्तियों का घर है और सभी पापों का आश्रय-स्थान है, इसलिए ऐसे संसार को (उसकी सत्यता व उसके प्रति राग को) त्याग देना चाहिए ।

यह खेद की बात है कि अज्ञान से मोहित होकर सभी जीव अपनी देह, धन, पत्नी आदि में आसक्त होकर बार-बार पैदा होते हैं और मर जाते हैं, इसलिए (शरीर, घर, बेटे-बेटियाँ आदि के प्रति) सदा आसक्ति का त्याग कर देना चाहिए । आत्मवेत्ता संतों-महापुरुषों का सान्निध्य-सेवन करना चाहिए क्योंकि वे संसार-आसक्तिरूपी रोग के औषध हैं ।

**सत्संगश्च विवेकश्च निर्मलं नयनद्वयम् ।**
**यस्य नास्ति नरः सोऽन्धः कथं न स्यादमार्गगः ॥**

'सत्संग और विवेक - ये दोनों ही व्यक्ति के दो निर्मल नेत्र हैं । जिस व्यक्ति के पास ये नहीं हैं, वह अंधा है । वह अंधा मनुष्य कुमार्गगामी क्यों नहीं होगा !'

हे गरुड़ ! मुक्ति न वेदाध्ययन से प्राप्त होती है और न शास्त्रों के अध्ययन से ही, मोक्ष की प्राप्ति तो ज्ञान से ही होती है किसी दूसरे उपाय से नहीं ।

सद्गुरु का वचन ही मोक्ष देनेवाला है, अन्य सब विद्याएँ विडम्बनामात्र हैं । लकड़ी के हजारों भारों की अपेक्षा एक संजीवनी ही श्रेष्ठ है । कर्मकाण्ड और वेद-शास्त्रादि के अध्ययनरूपी परिश्रम से रहित केवल गुरुमुख से प्राप्त अद्वैत ज्ञान ही कल्याणकारी कहा गया है, अन्य करोड़ों शास्त्रों को पढ़ने से कोई लाभ नहीं । इसलिए हे गरुड़ ! यदि अपने मोक्ष की इच्छा हो तो सर्वदा सम्पूर्ण प्रयत्नों के साथ सभी अवस्थाओं में निरंतर आत्मज्ञान की प्राप्ति में संलग्न रहकर श्रीगुरुमुख से आत्मतत्त्व-विषयक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए । ज्ञान प्राप्त होने पर प्राणी इस घोर संसार-बंधन से सुखपूर्वक मुक्त हो जाता है ।''

**(श्री गरुड़ पुराण, अध्याय : १६)** ☐

---

**(पृष्ठ २१ से 'वीर्यरक्षा के उपाय' का शेष)**

वैसे ही आप हो जाते हो । यह सारी सृष्टि ही संकल्पमय है । दृढ़ संकल्प करने से वीर्यरक्षण में मदद मिलती है और वीर्यरक्षण से संकल्पबल बढ़ता है । **विश्वासः फलदायकः ।** जैसा विश्वास और जैसी श्रद्धा होगी वैसा ही फल प्राप्त होगा । ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों में यह संकल्पबल असीम होता है । वस्तुतः ब्रह्मचर्य की तो वे जीती-जागती मूर्ति ही होते हैं । **(क्रमशः)** ☐

## बताओ तो जानें

१. अर्जुन था वह नागक्षेत्र का
और रसायन का आचार्य।
पारे को सोना करने का
उसने किया अनोखा कार्य ॥
भारत के विज्ञान गगन का
वह था इक तारा अनमोल।
रस रत्नाकर किसे कहा है,
उसका नाम तुरंत दो बोल॥

२. पुरु वंश का कौन-सा राजा,
था परम प्रतापशाली।
गदायुद्ध शस्त्रविद्या में निपुण,
था बड़ा बलशाली ॥
धर्मपरायण प्रजा थी जिसकी,
सब ओर खुशहाली छायी।
मेनकापुत्री बनी धर्मपत्नी,
पुत्र हुआ दिग्विजयी ॥

३. कौन था वह ऋषिकन्या का पुत्र,
जिसने किया पूरी पृथ्वी पर राज।
विष्णु समान बलवान थे जिसके पिता,
ऋषि कण्व का था जिस पर आशीर्वाद ॥

४. ब्रह्मास्त्र का मान रखकर, परास्त हुए जो वीर।
ब्रह्मज्ञान पानेवाले, कौन थे वे ब्रह्मचर्य में धीर ॥

५. वह क्या है जो प्रतिक्षण बढ़ता रहता है ?

६. किससे गुणी व महान व्यक्ति भी नष्ट हो जाते हैं ?

७. वह क्या है जिसके द्वारा दुर्बल व्यक्ति भी कठिन कार्य कर लेता है ?

८. वह वस्तु कौन-सी है जिसके अभाव में स्वाभिमानी व्यक्ति जी नहीं सकता ?

९. बुरे वक्त में भी मनुष्य को
क्या नहीं बेचना चाहिए ?

| सो | व | नी | स | र | ब | प | क | भ | शा | ट | म |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | ढ़ | ग | च | य | ए | ल | दा | ण | ई | ल | व |
| त | ज | चि | ठ | ना | रा | ब | ली | ल | छ | की | घ |
| द | ध | द | ही | यी | ख | टी | मं | ड़ | सं | ज्ञ | ह |
| सो | त्र | ल | स | द | य | त्र | बा | त | श | तो | य |
| ता | छ | क | ल | म | जा | प | न्ह | ओ | र | घ | षा |
| क | ण | रा | हि | प | प | ख | ट | सं | स | क | प |
| अ | ति | मो | क्ष | वि | स | गा | ख | प | धू | च | क्ष |
| ठी | न | र | दा | ढ | न | ट | सं | ष | क | ह | थ |
| ज | ङ | झ | बि | मा | ङ | स्ट | त | प्र | क्ष | झ | स |
| ग | न | घ | अ | प्र | टु | त | द | की | जी | ग | र |
| या | श | च | ग | ञ | न | ब | भ | ओ | धि | ड | ष |

**अंक २२४ की वर्ग पहेली के उत्तर**

(१) स्वामी विवेकानंदजी (२) श्वेतकेतु (३) मुक्तानंदजी (४) मीराबाई (५) श्रीरामजी (६) श्रीकृष्ण (७) संत श्री आशारामजी बापू (८) सूरदासजी (९) माँ पार्वती (१०) सहजोबाई

## ज्ञान दीपिका

**रिक्त स्थानों की पूर्ति दी गयी तालिका से करें।**

प्रथम भगति ......... कर संगा।
दूसरि रति मम कथा ......... ॥
गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति ....... ।
चौथि भगति मम गुन गन करइ .....तजि गान ॥
........... मम दृढ़ बिस्वासा।
पंचम भजन सो बेद प्रकासा ॥
छठ दम सील ........ बहु करमा।
निरत निरंतर सज्जन धरमा ॥
सातवँ सम ........... जग देखा।
मोतें संत अधिक करि लेखा ॥
आठवँ जथालाभ .......... ।
सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा ॥
नवम सरल सब सन ........... ।
मम भरोस हियँ हरष न दीना ॥

(उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।)

# रस्सा काट दो !

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एक दिन सुबह शिवाजी की माँ दातुन कर रही थीं । उन्होंने शिवाजी से हाथ का इशारा करते हुए कहा : ''शिवा ! ये देखो, मैं रोज सुबह दुष्टों का झंडा देखती हूँ । इसका कुछ उपाय करो ।''

शिवाजी ने सोचा, 'यह तानाजी का काम है और वे छुट्टी पर हैं । कोई दूसरा इसे नहीं कर सकता ।' तानाजी शिवाजी के खास आदमी थे । उनके लड़के की शादी थी इसलिए वे छुट्टी लेकर घर गये थे । शिवाजी ने आदमी भेजा । तानाजी अपने बेटे को घोड़े पर बिठाकर शादी के लिए भेज रहे थे । आदमी ने आकर कहा : ''शिवाजी आपको याद कर रहे थे । कोंढाणा का किला जीतने जाना था लेकिन आपको मैं कैसे बोलूँ ! आपके लड़के की शादी तो आज ही है ।''

तानाजी ने कहा : ''शादी है तो वह करता रहेगा । मेरे मालिक ने बुलाया है तो अब कैसे रुकूँ !''

तानाजी नौकर थे, शिष्य तो नहीं थे । इतना वफादार नौकर ! लड़के की शादी होनी होगी तो होगी, नहीं होनी होगी तो नहीं होगी । वापस शिवाजी के पास चले गये । शिवाजी ने कहा :

''तुम शादी छोड़कर आ गये !''

तानाजी ने कहा : ''जब आपने याद किया तो मुझे रुकने की क्या जरूरत !''

देखो, कैसे-कैसे लोग हो गये ! तानाजी फौज को लेकर गये । पहले के जमाने में किले होते थे । पतली गोह को चढ़ाया... नहीं चढ़ी । दूसरी बार भी नहीं चढ़ी । तीसरी बार बोला कि ''नहीं जायेगी तो काट डालूँगा ।'' वह चढ़ गयी । फिर रस्सा बाँधा और सेना कूद पड़ी किले में । ये लोग तो गिने-गिनाये थे और मुगलों की संख्या ज्यादा थी । युद्ध का सारा सामान उनके पास था । वे इन पर टूट पड़े । तानाजी के कुछ सैनिक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए, बाकी घबरा गये । एक बूढ़ा सैनिक गया और जिस रस्से के सहारे वे किले में आये थे, उसे काटकर आ गया । आकर सैनिकों को कहा : ''मैं रस्सा काटकर आ गया हूँ । अब तो उतरने की गुंजाइश भी नहीं है । दीवाल से कूदोगे तब भी मरोगे । लड़कर मरो अथवा कूदकर ।''

सैनिकों ने देखा, किसी भी हाल में मरना ही है तो लड़कर मरेंगे । जोश आ गया । लग पड़े और किला जीत लिया । ऐसे ही जो लोग संन्यास ले लेते हैं, दीक्षा ले लेते हैं, उन्हें दृढ़ता से आसक्तिरूपी रस्से को काट डालना चाहिए । जैसे हमने भी दाढ़ी रखी और साधुताई के वस्त्र पहन लिये, पूँछड़ा काट दिया तो हमारा काम बन गया । मुझे गुरुजी कुछ कहते अथवा थोड़ी प्रतिकूलता लगती तब यदि हम बोलते : 'अच्छा गुरुजी ! जाता हूँ ।' तो हमारा क्या भला होता ! हम गुरुजी के चरणों में कैसे-कैसे रहते थे हमारा दिल जानता है ! हमें कभी ऐसा विचार नहीं आया कि चलो अहमदाबाद चलकर शक्कर बेचें और भजन करें । जब आये हैं तो अपना काम 'साक्षात्कार' करके ही जायें । ईश्वर के लिए कदम रख दिया तो फिर कायर होकर क्या भागना ! देर-सवेर संसार से तो रोकर ही जाना है ।

**हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं ।**
**हमसे जमाना है जमाने से हम नहीं ॥**

ऐसे दृढ़ निश्चय से व्यक्ति चलेगा तब परमात्मा मिलेगा । नहीं तो न इधर का, न उधर

का। संसार दुःखों का घर है। दुःख नहीं देखा है तो संसार में जाओ। ऐसा कौन संसारी है जिसने दुःख नहीं देखा है ? दो आदमियों को दुःख नहीं दिखता है। एक तो ज्ञानी को नहीं दिखता है और दूसरा जो अत्यंत बेवकूफ है, जिसमें संवेदना नहीं है, उसको उसकी आदत पड़ जाती है। नाली के कीड़े को बदबू नहीं आती है। कसाईखाने में कसाई को बदबू नहीं आती है। तुम वहाँ से पसार होओ तो दिमाग खराब हो जाय। कसाई तो वहीं मजे से चाय पियेंगे। आदत पड़ जाती है न ! जैसे जिसे नासूर हो जाय उसे बदबू का असर नहीं होता है, ऐसे ही संसार की परेशानियाँ सहते-सहते लोग नकटे हो जाते हैं। फिर उसीमें रचे-पचे रहते हैं और अपने को सुखी भी मानते हैं। जो भगवान के रास्ते चल रहा है उसे कहेंगे कि 'इसने तो अपना जीवन बिगाड़ लिया। हमारा तो इतना लाख दुकान में है, यह है, वह है...' लेकिन जब मरेगा तो पेड़ बनेगा, कुल्हाड़े सहेगा तब पता चलेगा। भैंसा बनेगा, चौरासी लाख शीर्षासन करेगा तब पता चलेगा। कमाया तो क्या किया !

जैसे मटमैले पानी में मुँह नहीं दिखता, ऐसे ही विषय-भोगों से सुख लेने की जिसकी रुचि है, समझो उसकी बुद्धि मलिन है, उस मलिन बुद्धि में आत्मा का सुख नहीं आता, श्रद्धा भी नहीं टिकती। अपवित्र बुद्धि डाँवाडोल हो जाती है परंतु दृढ़ निश्चयवाले को प्रतिकूलता में भी राह मिल जाती है। दृढ़ संकल्प के बल से मीराबाई ने विष को अमृत में बदल दिया था और विषधर सर्प भी नौलखा हार बन गया था। स्वामी रामतीर्थ भी दृढ़ता से लगे तो अपने परम लक्ष्य तक पहुँच गये। कहते हैं कि महात्मा बुद्ध भी वृक्ष के नीचे दृढ़ संकल्प करके बैठे और अंत में लक्ष्यप्राप्ति करके ही उठे। ऐसे ही आप भी ईश्वरप्राप्ति का दृढ़ संकल्प करें और संसार की आसक्तिरूपी रस्सा काट दें तो निश्चित ही आपकी विजय होगी। ❑

# भारतीय संस्कृति के आधारभूत तथ्य

**अष्टसिद्धि** : अणिमा (अति सूक्ष्म रूप धारण करने की सिद्धि), महिमा (इच्छानुसार अपना विस्तार करने की सिद्धि), गरिमा (इच्छानुसार शरीर का भार बढ़ाने की सिद्धि), लघिमा (लघुतम रूप धारण करने की सिद्धि), प्राप्ति (इच्छित वस्तु प्राप्त करने की सिद्धि), प्राकाम्य (सभी मनोरथ पूर्ण करने की सिद्धि), ईशित्व (सब पर शासन करने की सिद्धि), वशित्व (सबको वश में करने की सिद्धि)।

**अष्टधातु** : सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, पारा, लोहा, सीसा, जस्ता।

**अष्टधा प्रकृति** : पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार।

**अष्टांग योग** : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। (यम : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। नियम : शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान/ईश्वर-आराधन)

**अष्ट सात्त्विक भाव** : स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कम्प, वैवर्ण्य, अश्रु, प्रलय।

**अष्ट भाव** : रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा (उपेक्षापूर्वक की जानेवाली घृणा), विस्मय।

**अष्ट भेद (स्पर्श के)** : शीत, उष्ण, मृदु, कठोर, रुक्ष, स्निग्ध, हलका, भारी।

**आठ रस** : श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत।

**आठ प्रकार का मद** : ज्ञान, प्रतिष्ठा, कुल, जाति, बल, धन-सम्पत्ति, तपश्चर्या, शरीर की सुंदरता का।

**अष्ट गंध** : चंदन, अगर, देवदारु, केसर, कपूर, शैलज, जटामांसी, गोरोचन। **(क्रमशः)** ❑

## मुनक्का एवं किशमिश

अंगूर को जब विशेषरूप से सुखाया जाता है तब उसे मुनक्का कहते हैं। अंगूर के लगभग सभी गुण मुनक्के में होते हैं। यह दो प्रकार का होता है - लाल और काला। मुनक्का पचने में भारी, मधुर, शीत, वीर्यवर्धक, तृप्तिकारक, वायु को गुदाद्वार से सरलता से निकालनेवाला, कफ-पित्तहारी, हृदय के लिए हितकारक, श्रमनाशक, रक्तवर्धक, रक्तशोधक, मलशोधक तथा रक्तपित्त व रक्त-प्रदर में भी लाभदायी है।

किशमिश भी सूखे हुए अंगूर का दूसरा रूप है। इसमें भी अंगूर के सारे गुण विद्यमान होते हैं। दूध के लगभग सभी तत्त्व किशमिश में पाये जाते हैं। दूध के अभाव में इसका उपयोग किया जा सकता है। किशमिश दूध की अपेक्षा शीघ्र पचती है। मुनक्के के नित्य सेवन से थोड़े ही दिनों में रस, रक्त, शुक्र आदि धातुओं तथा ओज की वृद्धि होती है। वृद्धावस्था में किशमिश या मुनक्के का प्रयोग न केवल स्वास्थ्य की रक्षा करता है बल्कि आयु को बढ़ाने में भी सहायक होता है। किशमिश और मुनक्के की शर्करा शरीर में अतिशीघ्र पचकर आत्मसात् हो जाती है, जिससे शीघ्र ही शक्ति व स्फूर्ति प्राप्त होती है।

### किशमिश एवं मुनक्के के कुछ स्वास्थ्य-प्रदायक प्रयोग

**दौर्बल्य** : अधिक परिश्रम, कुपोषण, वृद्धावस्था या किसी बड़ी बीमारी के बाद शरीर जब क्षीण व दुर्बल हो जाता है, तब शीघ्र बल प्राप्त करने के लिए किशमिश बहुत ही लाभदायी है। १०-१२ ग्राम किशमिश २०० मि.ली. पानी में भिगोकर रखें व दो घंटे बाद खा लें।

**रक्ताल्पता** : मुनक्के में लौह तथा सभी जीवनसत्त्व (विटामिन्स) प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। १०-१५ ग्राम काला मुनक्का एक कटोरी पानी में भिगोकर रखें। इसमें थोड़ा-सा नींबू का रस मिलायें। ४-५ घंटे बाद मुनक्का चबा-चबाकर खायें, इससे रक्ताल्पता मिटती है।

**अम्लपित्त** : किशमिश मधुर, स्निग्ध, शीतल व पित्तशामक है। इसे पानी में भिगोकर बनाया गया शरबत सुबह-शाम लेने से पित्तशमन, वायु-अनुलोमन व मल-निस्सारण होता है, जिससे अम्लपित्त में शीघ्र ही राहत मिलती है। रक्तपित्त, दाह व जीर्णज्वर में भी यह प्रयोग लाभदायी है। इसके सेवन के दिनों में आहार में पाचनशक्ति के अनुसार गाय के दूध तथा घी का उपयोग करें।

**कब्ज** : किशमिश में उपस्थित मैलिक एसिड मल-निस्सारण का कार्य करता है। २५ से ३० ग्राम किशमिश व १ अंजीर रात को २५० मि.ली. पानी में भिगोकर रखें। सुबह खूब मसलकर छान लें। फिर उसमें आधा चम्मच नींबू का रस व २ चम्मच शहद मिलाकर धीरे-धीरे पियें। कुछ ही दिनों में कब्ज दूर हो जायेगी।

**शराब के नशे से छुटकारा** : शराब पीने की इच्छा हो तब शराब की जगह १० से १२ ग्राम किशमिश चबा-चबाकर खाते रहें या किशमिश का शरबत पियें। शराब पीने से ज्ञानतंतु सुस्त हो जाते हैं परंतु किशमिश के सेवन से उन्हें शीघ्र ही पोषण मिलने से मनुष्य उत्साह, शक्ति और प्रसन्नता का अनुभव करने लगता है। यह प्रयोग प्रयत्नपूर्वक करते रहने से कुछ ही दिनों में शराब छूट जायेगी।

**आवश्यक निर्देश** : किशमिश, मुनक्का व अंजीर को अच्छी तरह से धोने के बाद ही उपयोग करें, जिससे धूल-मिट्टी, कीड़े, जंतुनाशक दवाई का प्रभाव आदि निकल जायें। ☐

## एक घड़ी में सब छुड़ा दिया

मैं कुसंग के कारण बुरी आदतों में पड़ गया व १६ वर्ष की उम्र से ही धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि व्यसनों में लिप्त हो गया था। एक बार मेरा अरब देश जाना हुआ। वहाँ मुझे होटल में रसोइये का काम मिला। दो साल में एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरा जब मैंने मांसाहार न किया हो।

मेरे किसी जन्म का पुण्य उदय हुआ जो मैं अपने एक मित्र के साथ मई १९९५ में पूज्य बापूजी के सत्संग में जा पहुँचा। उस थोड़े समय के सत्संग ने मेरा पूरा जीवन ही बदल डाला। सत्संग के बाद जब घर पहुँचा तो मेरे तीन छोटे भाई शराब और मांस के साथ मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं उनके साथ जा बैठा। जैसे ही शराब का गिलास मैंने अपने होंठों से लगाया, एकाएक मुझे करंट-सा लगा ! अंदर से आवाज आयी कि 'यह क्या कर रहा है !' मानो बापूजी मेरे सामने खड़े होकर मुझे शराब पीने से रोक रहे हों। मैं एक घूँट भी नहीं पी पाया। गिलास वापस रख के भाइयों से बोला : ''अब मैं शराब कभी नहीं पीऊँगा।'' मैंने पूज्य बापूजी से दीक्षा ले ली। दीक्षा के प्रभाव से मुझे सभी व्यसनों व बुरी संगत से छुटकारा मिल गया। बापूजी की इस कृपा का ऋण मैं कभी नहीं चुका पाऊँगा।

**बुद्धि से जोगी की महिमा मापी नहीं जा सकती।**
**जोगी ने उपकार किये जो उनकी ना है गिनती ॥**

**– सतीश सलूजा, दिल्ली**

**मो. : ९८६८२३२५१०**

## स्वस्थ रहने की कला देती है 'ऋषि प्रसाद'

मैंने और मेरी पत्नी ने २०१० में पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा ली थी। मार्च २०११ की बात है, मेरे चचेरे भाई की पत्नी को प्रसूति के लिए डॉक्टर के पास ले गये। उसने दूसरे अस्पताल में भेज दिया। वहाँ भी ३६ घंटे हो गये मगर प्रसूति नहीं हुई। मुझे अचानक ध्यान आया कि **'ऋषि प्रसाद'** में छपा था – 'देसी गाय के गोबर का रस भगवन्नाम-जप करके पिलाने से आसानी से प्रसूति हो जाती है।' मैंने वैसा ही किया। बापूजी की कृपा से ३ घंटे में ही सामान्य प्रसूति हो गयी।

**– शिवराम लौवंशी, इन्दौर (म.प्र.)**

## जीवन जीने की कला देती है 'ऋषि प्रसाद'

मेरा और मेरी पत्नी का शादी के दिन से ही झगड़ा शुरू हो गया था। ज्योतिषी ने कहा : ''तुम्हारा कुण्डली-मिलान नहीं हुआ है, झगड़ा होता ही रहेगा। उसे कोई नहीं रोक सकता।'' मैं और भी निराश हो गया। काम-विकार ज्यादा होने से कई रोगों ने घेर लिया। मैं इतना मलिन था कि ८-१० दिन में एक बार ही नहाता था। सामनेवाली दुकान में **'ऋषि प्रसाद'** आती थी। उसे सिर्फ एक बार ही पढ़ा तो बहुत अच्छा लगा। जीवन में आगे बढ़ने का बल मिला। पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा ले ली। दीक्षा से तो दशा ही बदल गयी। वर्षों से चला आ रहा पारिवारिक कलह समाप्त हो गया। आपसी प्रेम बढ़ गया। अभी पूरा परिवार दीक्षित है।

कहाँ तो रोज का झगड़ा ! ज्योतिषी ने भी बोला कि झगड़े होंगे। दीक्षा लेते ही अनमिली कुण्डली कैसे बदल गयी ! ज्योतिषी के वचन अर्थात् विधि का विधान पलट गया ! ऐसी गुरुदीक्षा और गुरुजी को प्रणाम !

**– भोगीराम सेन, गुना (म.प्र.)**

**मो. : ९९८१६५६४६१** ☐

# संस्था समाचार

**('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)**

**३१ जुलाई** को पूज्य बापूजी की सत्संग-गंगा **हिसार** में बही । यहाँ बापूजी ३० की शाम को ही हेलिकॉप्टर से आ गये थे । पूज्यश्री के शुभागमन की खबर पाते ही आश्रम का पंडाल सत्संगियों से भर गया । पूज्य बापूजी विनोदी शैली में सार बात बताते हुए बोले : ''भगवान का आनंद, भगवान का माधुर्य और भगवान की सत्ता चमचम चमके यही हिसारवालों के लिए सार है । हिसार में सार क्या है ? परमात्मा का आनंद ही सार है ।''

**१ अगस्त** को बापूजी **देहरादून** पहुँचे । जैसे ही यहाँ के साधकों को पता लगा कि बापूजी आ रहे हैं, वे हजारों की संख्या में बापूजी के दर्शन करने पहुँचे । २ की **शाम** को भी देहरादूनवालों को सत्संग का लाभ मिला । उसके बाद बापूजी एकांतवास हेतु **ऋषिकेश** के लिए प्रस्थान कर गये ।

सात मोक्षदायिनी पुरियों में से एक **हरिद्वार** की पवित्र भूमि... साधना के लिए अमृततुल्य प्रभावशाली चतुर्मास और उसमें भी ब्रह्मज्ञानी महापुरुष का सान्निध्य एवं साधना को एकदम ऊँचाई पर पहुँचा देनेवाला सत्संग पाकर धन्य हुए पुण्यात्मा ! **३ (शाम) से ११ अगस्त** तक यह सौभाग्य साधकों, भक्तों को मिला । पूज्य बापूजी की अमृतवाणी में आया : ''ब्राह्मी स्थिति कैसे हो ? बोले : 'उसमें टिक जायें ।' तो टिकनेवाला तो मौजूद रहेगा ! फिर क्या टिकेगा ? उसके लिए सूक्ष्म सत्संग चाहिए, गुरु की कृपा चाहिए ।

गुरु की कृपा कब हजम होती है ?

**आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रततपः क्रियाः ।**
**ताः सर्वाः सफला देवि गुरुसंतोषमात्रतः ॥**
**(श्री गुरुगीता : १४७)**

करोड़ों जन्मों के यज्ञ, जप, तप उसी दिन सफल हो गये, जिस दिन गुरुजी हमारे आचरण से, हमारी ईमानदारी से, हमारी वफादारी से संतुष्ट हो गये। गुरु को लगा कि यह पात्र है, तब गुरु के हृदय से उछलती है कृपा और शिष्य को हजम हो जाती है ।''

इस एकांत में भी सत्संग-मंडप भर जाता था । लोगों को सुबह-शाम सत्संग का लाभ मिलता था । पूज्यश्री के एकांतकाल में भी देश-विदेश के लोगों को 'आई.वी.आर.' सत्संग-सेवा (फोन के माध्यम से) और आश्रम के इंटरनेट टी.वी. चैनल के द्वारा सूक्ष्म सत्संग का लाभ मिला ।

यहाँ एकांतवास के दौरान निःसंकल्प अवस्था की महिमा पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''हलके संकल्प करनेवाले हलकी क्रियाओं में, हलके कर्मों में लग जाते हैं और ऊँचे संकल्पवाले ऊँचे भोग में; किंतु संकल्प को निःसंकल्प में बदलें तो मनुष्य सिद्धपुरुष हो जाता है ।''

**११ अगस्त** की **शाम** को सत्संग का एक सत्र **रजोकरी आश्रम (दिल्ली)** में हुआ ।

**१२ व १३ अगस्त** को **अहमदाबाद** में पूज्यश्री के सान्निध्य में **रक्षाबंधन महोत्सव** मनाया गया । **दिने दिने नवं नवम्...** की उक्ति को चरितार्थ करनेवाले पूज्य बापूजी ने इस अवसर पर बड़ी रहस्यमय बात बतायी : ''जैसे शनि की क्रूर दृष्टि हानि करती है ऐसे ही शनि की बहन भद्रा का भी प्रभाव नुकसान करता है । भद्राकाल में रक्षासूत्र नहीं बाँधना चाहिए । भद्राकाल में रक्षा बँधवा ली शूर्पणखा से रावण ने । परिणाम यह हुआ कि उसी वर्ष रावण का कुलसहित नाश हुआ ।''

इस प्रसंग को सुनाकर पूज्य बापूजी ने देश-विदेश की जनता को १३ अगस्त को भद्राकाल की समाप्ति के बाद ही रक्षाबंधन मनाने का हितभरा संदेश दिया । धन्य हैं वे परम सौभाग्यशाली बापूजी के श्रोता, जो सुख-शांति व आनंदमय जीवन के लिए जरूरी ऐसी परम हितकारी बातों को लोकसंत बापूजी के सत्संग के माध्यम से जान लेते हैं ! जिन्हें भी सुखी, स्वस्थ, सम्मानित जीवन जीने की कला जाननी-सीखनी हो, उनके लिए बाकी सब तो वैकल्पिक है परंतु बापूजी का सत्संग अनिवार्य है, परम आवश्यक है । इस देश की सनातन संस्कृति का महिमा-मंडन करते हुए संतश्री बोले : ''भारतीय संस्कृति ने तो कमाल कर दिया ! नारीशक्ति का पूजन करने की बात कही । जहाँ नारी नारायणी के

रूप में सम्मानित होती है, वहाँ देवत्व छलकता है। इस देवत्व का परिचायक, इस देवत्व का व्यावहारीकरण है रक्षाबंधन-महोत्सव।''

**१३ व १४ अगस्त** को **बदरपुर-दिल्ली** में रक्षाबंधन महोत्सव एवं पूर्णिमा दर्शन सम्पन्न हुआ। जैसे ही बापूजी का दिल्ली हवाईअड्डे पर पदार्पण हुआ, भक्तों की लम्बी कतारें अपने गुरुवर के दर्शन के लिए पलकें बिछाकर प्रतीक्षा कर रही थीं। सत्संग हेतु बदरपुरवासियों का ऐसा तो हुजूम उमड़ा कि विशाल सत्संग-पंडाल भी नन्हा साबित हो गया।

मूल में होनेवाली भूल को हटाने की हिदायत देते हुए बापूजी ने कहा : ''लोग कर्म करते समय सावधान नहीं रहते हैं लेकिन जब उसका फल मिलता है तब दुःखी होते हैं। हकीकत में दुष्ट कर्म का विचार आये उसी समय दुःखी होना चाहिए।

आप, आपकी संतान और आपके पूर्वजों का आपके साथ संबंध है। आप उस जंजीर की एक कड़ी हैं जो पीछे भी है और आगे भी है। आपके कर्म पीछेवालों और आगेवालों पर भी असर करेंगे। आप महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। आप बुराईरहित हो जाओगे तो आपके पूर्वजों का भी मंगल होगा और आनेवाले पुत्र-पौत्रों का भी मंगल होगा।''

**१४ अगस्त** की **शाम** को **अलवर (राज.)** में सत्संग हुआ। पंडाल के पास ही हेलिपैड बनाया गया था। जैसे ही हेलिकॉप्टर उतरा, स्थानीय जनता ने बापूजी का अभिवादन किया। बापूजी सीधे पंडाल पहुँचे। वहाँ बारिश में भीगते हुए अलवरवासी दर्शन-सत्संग के लिए लालायित थे। बारिश भी अलवरवालों की श्रद्धा-भक्ति को नहीं रोक पायी। यहाँ की जनता को विपदा के क्षणों में भी सही निर्णय लेने की कुंजी बताते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''कैसी भी मुसीबत आयी हो, उस समय घबराकर मैदान नहीं छोड़ना चाहिए अथवा हल्ला बोलकर परेशान नहीं होना चाहिए। अंतरात्मा में शांत होकर निर्णय करना चाहिए।''

**१५ अगस्त** को **सवाई माधोपुर (राज.)** में सत्संग हुआ। पूज्यश्री ने यहाँ की धर्मप्रेमी जनता को धर्म-ज्ञान के साथ-साथ आत्मिक ज्ञान का भी रस चखाया। अपनी वेदांतिक विलक्षण शैली में परमेश्वर-तत्त्व की व्याख्या करते हुए आपश्री ने कहा : ''जिसको मन नहीं जान सकता लेकिन जो मन को ज़ानता है, जिसको दुनिया की सारी बुद्धियाँ मिलकर नहीं जान सकतीं किंतु जो सारी दुनिया की बुद्धियों का आधार है-प्रेरक है, कर्म का प्रेरक है, कर्म का निर्वाहक है और कर्म का फलदाता है वह परमेश्वर है। वह परमेश्वर सबका परम सुहृद है, सदा साथ है।''

**१६ अगस्त** को पूज्यश्री **श्योपुर (म.प्र.)** पहुँचे। यह वह पुराणप्रसिद्ध गौचर भूमि है, जिसका उल्लेख 'श्रीमद् भगवद्गीता' के दूसरे अध्याय के माहात्म्य में 'सौपुर ग्राम' इस प्रकार आता है। गौ-सेवा की महिमा पर प्रकाश डालते हुए गौ-प्रेमी पूज्य बापूजी ने कहा : ''आप गाय की सेवा करते हैं तो सचमुच आप बड़े पुण्यात्मा हैं। भले धन कम हो, महल नहीं हो लेकिन गौ-सेवा से आपके घर में जो सात्त्विकता होगी, जो खुशी होगी वह करोड़पतियों के घर में भी दुर्लभ होती है। जो गाय की सेवा करते हैं, हम उनकी सेवा करेंगे।''

बरसात में भी लोग सत्संग का आनंद ले रहे थे।

**१७ व १८ अगस्त** को **शिवपुरी (म.प्र.)** वालों के लिए सबसे पुण्यशाली दिन साबित हुआ। आज के दिन मनुष्य-जन्म के वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति करानेवाले, आत्मशिव से मिलानेवाले समर्थ संत का आगमन पहली बार इस नगरी में हुआ। सत्संग की महत्ता समझाते हुए पूज्यश्री बोले : ''निगुरे लोग जिन्होंने पहुँचे हुए संतों का सत्संग नहीं सुना, वे बेचारे मंदिरों में, मस्जिदों में, चर्चों में जा-जाकर भी वहीं-के-वहीं रह जाते हैं लेकिन जिन्होंने सत्संग सुना है वे एकदम उन्नत हो जाते हैं।''

**१९ व २० अगस्त** को **ग्वालियर** में सत्संग सम्पन्न हुआ। कृपण (कंजूस) का वास्तविक अर्थ बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''कृपण कौन है ? कृपण वह है जो अपने शरीर को, अपने विकारों को, अपनी चिंताओं को पकड़ रखता है और आत्मरस नहीं पाता है। महान खजाने की तरफ ध्यान नहीं देता है, छोटी-छोटी चीजों में जो उलझा है, जिसको छोड़कर मरेगा उसीको सँभाल रहा है वह कृपण है।''

म.प्र. के गृहराज्यमंत्री श्री नारायणसिंह कुशवाह बापूजी के दर्शन-सत्संग का लाभ लेने आये। उन्होंने कहा : ''हमने तो श्योपुर गौशाला में गायों की सेवा की है। मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ कि मुझे श्योपुर में गौ-सेवा का अवसर मिला। गृहराज्यमंत्री का पदभार सँभालने का सुंदर मार्गदर्शन मिला सत्संग में आकर।''

**२० अगस्त** को ग्वालियर में सत्संग की पूर्णाहुति करके पूज्यश्री **सरमथुरा (राज.)** व **हिण्डौन सिटी (जि. करौली, राज.)** के भक्तों को लाभान्वित करते हुए शाम ६ बजे दिल्ली पहुँचे। दिल्ली में दर्शन देकर आपश्री ने अहमदाबाद के लिए प्रस्थान किया। इस प्रकार २० अगस्त को एक ही दिन में पाँच-पाँच जगहों पर हुई अमृतवर्षा ने लाखों दिलों को भगवद्रस से सराबोर कर दिया।

**२१ व २२ अगस्त (दोपहर)** को जन्माष्टमी शिविर के निमित्त पूज्य बापूजी का **सूरत आश्रम** में हेलिकॉप्टर से आगमन हुआ। प्रथम व्यासपीठ पर न जाकर दर्शन हेतु बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे विशाल जनसैलाब को निकट से दर्शन देने हेतु पूज्यश्री रेलगाड़ी के माध्यम से भक्तों के बीच पहुँचे और उन्हें निहाल कर दिया।

२२ अगस्त को मटकीफोड़ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कलात्मक ढंग से सजी-धजी सैकड़ों मटकियाँ पूरे पंडाल में लटक रही थीं और पूज्य बापूजी व्यासपीठ पर बैठे हुए ही रिमोट कंट्रोल द्वारा उन मटकियों को फोड़कर भक्तों को आह्लादित कर रहे थे। सुसज्जित मटकियों का घूमना-झूमना, मक्खन-मिश्री का छिटकना मनोहारी वातावरण सृजित कर रहा था। भक्तजनों ने भी मटकियाँ फोड़कर प्रसाद पाने का आनंद-लाभ पाया।

हर प्रकार से हमारा हित करनेवाले पूज्य बापूजी ने शरद ऋतु में होनेवाले पित्तप्रकोप के शमनार्थ 'मिश्री रसायन' की गोलियाँ बनवाकर बँटवायीं। संतश्री बोले : ''अब तुमको छोड़कर हम नाश्ता करने जायें या आराम करने जायें ? हमारा आराम तो राम की कथा में है, राम के ज्ञान में है।''

आत्मज्योति के उज्ज्वल आलोक में जन्माष्टमी पर्व के वास्तविक उद्देश्य को उजागर करते हुए महाराजश्री बापूजी बोले : ''भगवान कृष्ण की महत्ता समझ के आप उनके भक्त हो जाओ, ऐसा जन्माष्टमी का उद्देश्य नहीं है। आप कृष्ण के अनुभव से सम्पन्न होकर निर्दुःख जीवन जियो, मुक्तात्मा बनो, दिव्यात्मा बनो, समाहित आत्मा बनो, यह जन्माष्टमी का उद्देश्य है।

आप जिस किसी मजहब में हों, जो भी आपके इष्टदेव हों... चाहे कृष्ण इष्टदेव हों, शिव हों, राम हों, लेकिन कृष्ण की जीवनलीलाओं से आप अपने जीवन को लीलामय बना लीजिये। आपका जीवन बोझा न हो। जन्माष्टमी का पर्व और सत्संग मानवमात्र को इतना मजबूत बना देता है कि चाहे कैसी भी परिस्थिति आये, उन सब परिस्थितियों में वह अडिग, अडोल रहेगा।''

**२२ अगस्त** की **शाम** पूज्यश्री का **दिल्ली** में आगमन हुआ तथा **२३ व २४ अगस्त** को **जोधपुर** में एकांतवास रहा। **२५ अगस्त** की **शाम पाली आश्रम (राज.)** में पूज्यश्री की सत्संग-गंगा बही। मात्र एक सत्र के सत्संग में बापूजी ने पालीवालों को निहाल कर दिया। ☐

## ❋ पूज्य बापूजी के आगामी सत्संग-कार्यक्रम ❋

| दिनांक | सत्संग-स्थल | दिनांक | सत्संग-स्थल |
|---|---|---|---|
| ३१ व १ सितम्बर | बाड़मेर (राज.) | ७ सितम्बर | दिवड़ा कॉलोनी (गुज.) |
| २ सितम्बर | बालोतरा (राज.) | ८ सितम्बर | वणांकबोरी, थर्मल (गुज.) |
| ३ व ४ सितम्बर (दोप.) | जोधपुर (राज.) | ९ सितम्बर | भेटासी (गुज.) |
| ४ (दोप.) से ५ सितम्बर | चावण्ड, जि. उदयपुर (राज.) | १० सितम्बर (सुबह) | धोलका (गुज.) |
| ५ सितम्बर (शाम) | डूंगरपुर (राज.) | १० (शाम) व ११ सितम्बर (सुबह) | अहमदाबाद |
| ६ सितम्बर | सागवाड़ा (राज.) | ११ व १२ सितम्बर | रोहिणी, सेक्टर-१०, दिल्ली |

# आश्रम संचालित सेवाकार्य

## गरीबों में हॉटकेस (गर्म टिफिन) का निःशुल्क वितरण

नगरी, जि. राँची (झारखंड)

मोडासा, जि. साबरकांठा (गुज.)

भालकी, जि. बीदर (कर्नाटक)

मंगरूलनाथ, जि. वाशिम (महा.)

## गरीबों-आदिवासियों में भण्डारे

कल्याण (पूर्व), जि. थाने (महा.)

डेहरी, जि. धार (म.प्र.)

शिकोहाबाद, जि. फिरोजाबाद (उ.प्र.)

भवानीपटना, जि. कालाहाण्डी (ओड़िशा)

## उत्तर प्रदेश के कूकनगर-ग्रान्ट (जि. गोण्डा) में अनाज तथा इटावा में अनाज व सत्साहित्य वितरण

# स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'युवा सेवा संघ' की देशभक्ति यात्राएँ

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2011)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
'D' No. MR/TECH/47.4/2011

गाजियाबाद (उ.प्र.)

हावड़ा (प.बंगाल)

हैदराबाद (आं.प्र.)

बैंगलोर (कर्नाटक)

कोलकाता (प.बंगाल)

भुवनेश्वर (ओड़िशा)

कानपुर (उ.प्र.)

जालंधर (पंजाब)

वाशिम (महा.)

भिलाई (छ.ग.)

रायपुर (छ.ग.)

अहमदाबाद (गुज.)

इनके अलावा बालोद (छ.ग.), अतरिया, भोपाल (म.प्र.), बेलगाम (कर्नाटक), अनगुल, केन्द्रपाडा, सम्बलपुर, कटक (ओड़िशा), बरेली, गोण्डा (उ.प्र.), जयपुर, श्रीगंगानगर (राज.), कल्याण, नागपुर, यवतमाल, जलगाँव, जामनेर (महा.), लुधियाना (पंजाब), पटना (बिहार), दिल्ली आदि अनेक-अनेक स्थानों में 'युवा सेवा संघ' द्वारा देशभक्ति यात्राएँ निकाली गयीं।

Posting at PSO Ahmedabad between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.